मकरसंक्रांति

सूर्योपासना से नवसंकल्प का पर्व

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 11 -17 january 2026

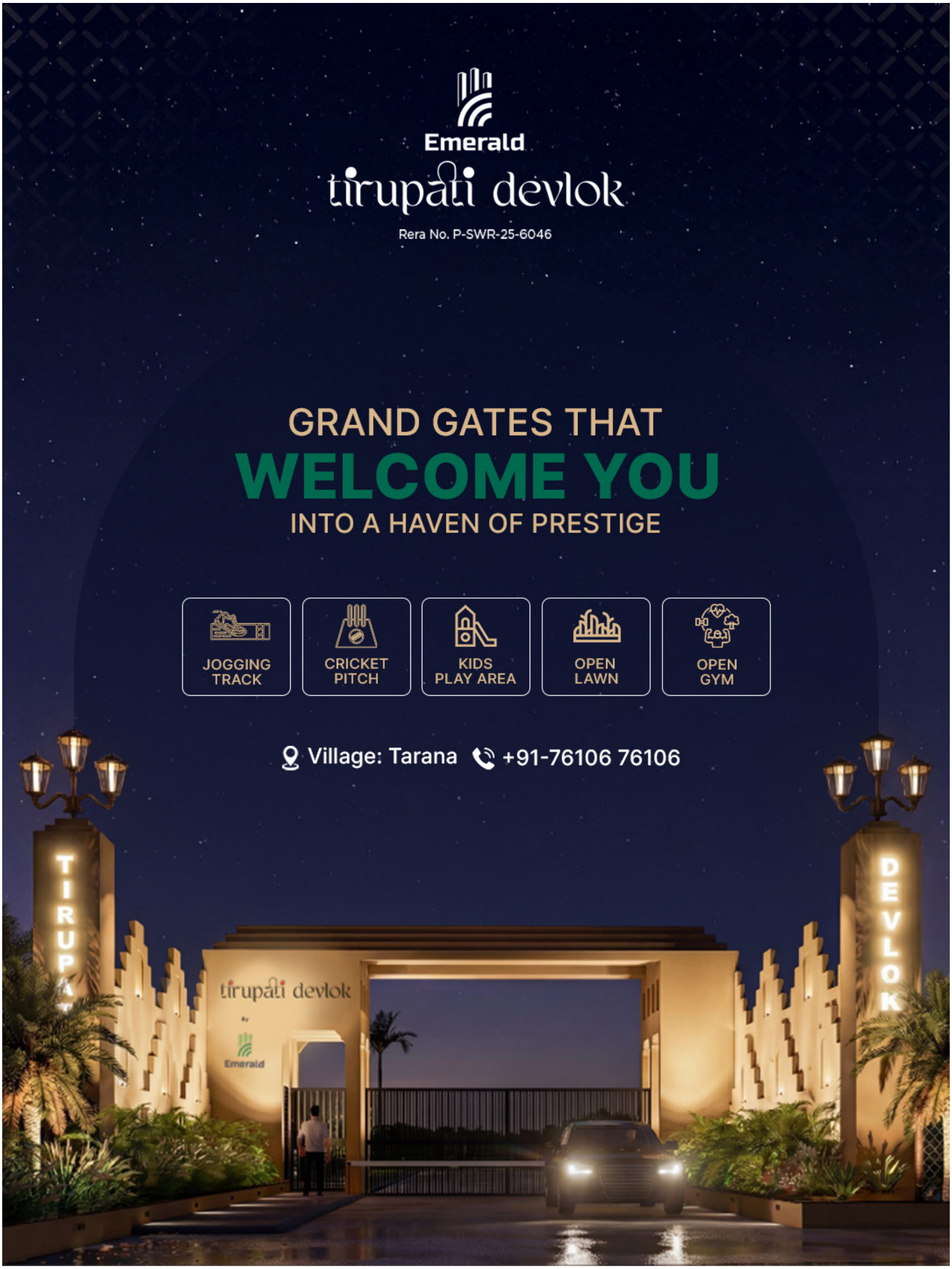
Emerald
tirupati devlok
Rera No. P-SWR-25-6046
GRAND GATES THAT
WELCOME YOU
INTO A HAVEN OF PRESTIGE
JOGGING TRACK
CRICKET PITCH
KIDS PLAY AREA
OPEN LAWN
OPEN GYM
Village: Tarana
+91-76106 76106
TIRUPATI
DEVLOK
tirupati devlok
Emerald

अनुक्रमणिका

सूर्योपासना, कृषि और दान का महापर्व	सौरभ शुक्ल	04
मकर संक्रांति पर गंगा स्नान की महिमा	पूनम नेगी	06
काय पो चे	डॉ. सौरभ मालवीय	07
हिंदू सम्मेलनों से विचारों का संदेश	राघव कुमार झा	11
संघ शाखाएं: व्यक्ति निर्माण की कर्मभूमि	सचिन तिवारी	13
राष्ट्र आराधना की प्रेरणा देते संघ गीत	अशोक कुमार सिन्हा	16
भारत बोध: साहित्य का विराट संगम	आशीष कुमार 'अंशु'	18
देवस्थान बने युवाओं की पहली पसंद	शिवा पंचकरण	20
सर्वेक्षण पर हो अवलोकन	डॉ. सुशील कोटनाला	22
रील्स में आनंद की अभिलाषा	अतुल गंगवार	25
मैदान पर देश सबसे बड़ा	राजीव रोहित	27
ओजस्वी व प्रखर समाज सुधारक स्वामी विवेकानंद	संकलन	28
समाचार	-	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

सूर्योपासना, कृषि और दान का महापर्व

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति का पर्व सूर्योपासना का पर्व माना जाता है। इस दिन सूर्य को अर्घ्य देने, गंगा स्नान करने, अनाज का दान करने व सेवन करने के धार्मिक व वैज्ञानिक महत्व हैं। मकर संक्रांति के त्यौहार को देश के प्रत्येक राज्यों में अलग-अलग नाम से जाना जाता है और इसे मनाने की परम्परा भी अलग है।

संक्रांति का अर्थ है सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना। इसका अर्थ है संक्रांति का काल एक वर्ष में 12 बार आता है क्योंकि राशियां 12 होती हैं। इस प्रकार संक्रांति प्रत्येक महीने होती है। मकर संक्रांति का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि इस दिन से सूर्यदेव दक्षिणायान से उत्तरायण हो जाते हैं, ये एक वैज्ञानिक बात है। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और ऐसा करते हुए सूर्य की परिक्रमा करती है। इस प्रकार सूर्य की परिक्रमा करते हुए 1 वर्ष का समय लगता है। इस 1 वर्ष में सूर्य 6 महीने दक्षिण दिशा और 6 महीने उत्तर दिशा से गतिमान रहते हैं। सूर्य उत्तरायण होते हुए मकर राशि में प्रवेश कर जाते हैं। ये एक महत्वपूर्ण समय है, जिसका अनुकूल प्रभाव पृथ्वी और पृथ्वीवासियों पर पड़ता है। धार्मिक रूप से मकर संक्रांति सूर्योपासना का पर्व है। इस दिन पूरे भारतवर्ष में सनातन धर्मावलम्बी पवित्र नदियों, कुंडों इत्यादि में स्नान करते हैं, सूर्यदेव की उपासना करते हैं और दान देते हैं।

आप जानते हैं भारत को कृषि प्रधान देश क्यों कहा जाता है? भारत के सभी उत्सव त्यौहार, छोटे-बड़े पर्व, कृषि के आस-पास ही घूमते हैं जैसे कि मकर संक्रांति। प्रकृति में जो बदलाव आते हैं उनका सीधा असर कृषि पर पड़ता है। इस समय पूरे भारतवर्ष में नई फसल प्राप्त होती है। सारा खान-पान इन्हीं फसलों से प्रेरित होता है। मकर संक्रांति के दिन इन्हीं नई फसलों का दान किया जाता है। जिस क्षेत्र में जो पैदा होता है उस क्षेत्र के लोग उस पैदावार का दान करते हैं और उन्हीं पदार्थों से विशेष व्यंजन बनाते हैं और उत्सव मनाते हुए उनका सेवन करते हैं।

सौरभ शुक्ल

मकर संक्रांति को पूरे भारत में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। भारत के दक्षिण में इस दिन पोंगल मनाया जाता है। पोंगल का शाब्दिक अर्थ है खिचड़ी। पूरे दक्षिण भारत में सर्वाधिक उपज चावल की होती है और संक्रांति का समय इस उपज को प्राप्त करने का है। इसलिए इस दिन चावल से अलग-अलग प्रकार और स्वाद का पोंगल बनाया जाता है। दक्षिण भारत में इसीलिए इस उत्सव का नाम पड़ गया पोंगल।

दक्षिण भारत की एक और विशेष बात है जिसकी चर्चा करना आवश्यक है। दक्षिण भारत में रंगोली चावल के चूर्ण से बनाई जाती है। ऐसा करने के पीछे का मूल भाव है हिंदू संस्कृति का सर्वसमावेशी होना। सहअस्तित्व के सिद्धांत को चरितार्थ करना। दक्षिण भारत में चावल के चूर्ण से रंगोली इसलिए बनाते हैं क्योंकि वहां चावल की पैदावार प्रचूर मात्रा में होती है और चावल के चूर्ण से बनी रंगोली को चिड़ियां और चीटियां खा जाती हैं। इस प्रकार प्रकृति में उनके अस्तित्व और महत्व का प्रतिपादन हो जाता है।

अब चलिए भारत के पूर्वोत्तर में चलते हैं। असम राज्य में मकर संक्रांति के अवसर पर बिहू पर्व मनाया जाता है जिसे माघ बिहू के नाम से जाना जाता है। यह पर्व नई फसल के तैयार होने की खुशी में मनाया जाता है। माघ बिहू से एक दिन पहले उरुका पर्व मनाया जाता है। इस दिन लोग पवित्र नदियों और सरोवरों में स्नान करते हैं, धान की पुआल से अस्थाई छावनी बनाते हैं, जिसे भेलाघर कहा जाता है। भेलाघर के पास चार बांस गाड़कर उन पर पुआल और लकड़ियां रखी जाती हैं। उरुका की रात को सामूहिक भोज का आयोजन किया जाता है। माघ बिहू के दिन प्रातः स्नान और ध्यान के बाद मेजी जलाकर पर्व की शुरुआत की जाती है। मेजी के जलने के बाद उसकी राख खेतों में छिड़की जाती है। ऐसी मान्यता है कि इससे खेतों की उर्वरता बढ़ती है। इस प्रकार असम के लोग माघ बिहू को हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाते हैं। मेजी का अर्थ है अलाव। इस उत्सव का मूल कृषि ही है।

चलिए पंजाब चलते हैं, संक्रांति की पूर्वसंध्या पर पंजाब में लोहड़ी का उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव नई फसल के प्राप्त होने पर मनाया जाने वाला पंजाब और हरियाणा का एक प्रमुख सामाजिक उत्सव है। सभी एक स्थान पर जुट जाते हैं और सायंकाल में अलाव के स्वरूप में लकड़ी और उपले जलाकर इसके चारों ओर पारम्परिक नृत्य, भांगड़ा और गिद्दा करते हैं। नई फसल का एक हिस्सा अग्नि को समर्पित किया जाता है। यहां भी सूर्य उपासना को महत्व दिया जाता है।

अब चलिए उत्तर प्रदेश और बिहार। वहां संक्रांति उत्सव को खिचड़ी कहा जाता है। इसका कारण भी वही है जो दक्षिण भारत में है, चावल की नई फसल। इन दोनों ही प्रदेशों में गंगा स्नान करके चावल, दाल, तिल इत्यादि का दान किया जाता है। घर में सभी एकत्रित होकर खिचड़ी बनाते हैं और वही खाते हैं।

गुजरात में संक्रांति को उत्तरायण कहा जाता है। इस दिन गुजरात में ऊंधियु और उम्बाड़ियु जैसे व्यंजन विशेषरूप से बनाए जाते हैं। ये दोनों ही व्यंजन मौसमी सब्जियों से बनाए जाते हैं। पूरे भारतवर्ष में धान, तिल और गन्ने की उपज इसी समय प्राप्त होती है। इन्हीं से तैयार होते हैं पोंगल, खिचड़ी, गुड़, गजक, चिकी जैसे स्वादिष्ट व्यंजन। संक्रांति मूलरूप से सूर्यदेव की आराधना और दान का पर्व है। भारत के कुछ क्षेत्रों में विशेषरूप से गुजरात और उत्तर प्रदेश के वाराणसी में पतंग उड़ाने की परम्परा भी है। हिंदू धर्म के त्यौहार, व्रत, उत्सव सब प्रकृति में हो रहे परिवर्तनों और कृषि से प्रेरित वैज्ञानिक उत्सव और त्यौहार हैं।

•••

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

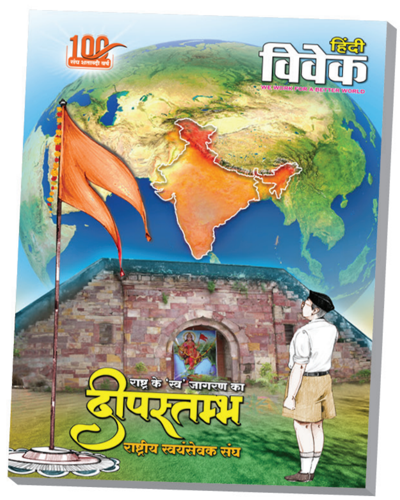

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क
प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

मकर संक्रांति पर गंगा स्नान की महिमा

पूनम नेगी

माघ मास में गंगा स्नान की एक अलग महिमा है। भक्तगण मकर संक्रांति के दिन गंगा स्नान करते हैं और ऐसी मान्यता है कि इस दिन स्नान करने से रोग, शोक व बाधाएं शांत होती हैं। विदित हो कि प्रयागराज में माघ मेला का विशेष आयोजन होता है, जहां लाखों की संख्या में लोग माघ स्नान करते हैं।

लोकमंगल व पुण्य प्राप्ति के लिए सनातन हिंदू धर्म में जिन अवसरों को प्रमुखता दी गई है, उनमें माघ मास की विशिष्ट महत्ता है। हिंदू कैलेंडर के 11वें महीने माघ का स्नान पर्व समूचे देश में रोचक परम्पराओं के साथ श्रद्धा भाव से मनाया जाता है।

माघ मकर गत रवि जब होई,
तीरथ-पतिहि आव सब कोई।

गोस्वामी तुलसीदास जी के इन शब्दों में तीर्थराज प्रयाग और माघ माह की महिमा स्वतः सिद्ध हो जाती है। इस माह में सूर्य नारायण अपनी दिशा परिवर्तित कर लोकमानस को यह संदेश देते हैं कि अब अंधकार को छोड़ प्रकाश की ओर बढ़ने का समय आ गया है। मकर संक्रांति से महाशिवरात्रि तक के इस आलोक मास की महिमा का बखान करते हुए भारतीय मनीषा कहती हैं कि पौष मास की कड़ाके की सर्दी के बाद संसार के प्राणदाता सूर्य नारायण जब दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करते हैं तो समूची सृष्टि में नवस्फूर्ति का संचार हो जाता है।

सनातन हिंदू धर्म में सूर्यदेव के स्थान परिवर्तन (संक्रांति) की इस विशिष्ट परिघटना को आध्यात्मिक व भौतिक दोनों ही दृष्टियों से विशेष लाभकारी माना जाता है। भारतीय ज्योतिष विज्ञान के अनुसार सूर्यदेव के धनु से मकर राशि में प्रवेश को मकर संक्रांति कहा जाता है। इस संक्रांति काल के विशिष्ट मुहूर्त में गंगा स्नान, सूर्याध्यान व अर्ध्य समर्पण अत्यधिक शुभ फलदायी माना जाता है। पवित्र नदियों के जल में खड़े होकर सूर्य को नमन करने से उनका दिव्य तेज श्रद्धालुओं के मन व प्राण दोनों को सात्विक भावों से अनुप्राणित कर देता है। इस कारण इस पावन अवसर पर तीर्थराज प्रयागराज, काशी, अयोध्या, नैमिषारण्य, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक से लेकर पश्चिम बंगाल के सागर द्वीप स्थित गंगासागर जैसे दिव्य सनातन तीर्थों में लाखों-करोड़ों श्रद्धालु मोक्ष की कामना से गंगा स्नान को जुटते हैं। ऐसी मान्यता है कि जो धर्मप्राण सनातनधर्मी इस पुण्यकाल में गंगा स्नान कर सूर्यनारायण का ध्यान-पूजन कर आध्यात्मिक ऊर्जा संग्रहित करते हैं उनके जीवन से सभी रोग, शोक व ग्रह बाधाएं शांत होकर तन, मन और आत्मा तीनों का नवजीवन हो जाता है। साथ ही भगवान भुवन भास्कर की कृपा दृष्टि से साधकों को मोक्ष का वरदान भी मिलता है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार यूं तो पूरे माघ महीने में गंगा स्नान का विशेष महत्व होता है, लेकिन इस शुभ अवधि में कुछ विशेष तिथियां ऐसी होती हैं, जिन पर किया गया गंगा स्नान कई गुना फलदायी माना जाता है। माघ मास के ये प्रमुख स्नान पर्व हैं- मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी, माघी पूर्णिमा और महाशिवरात्रि। मकर संक्रांति से महाशिवरात्रि तक के इस आलोक मास की महिमा का बखान करते हुए भारतीय मनीषा कहती है कि यह स्नान पर्व हमें प्रबोधित करता है कि हम सब भी जड़ता व आलस्य त्याग कर नए सकारात्मक विचारों को ग्रहण करें और काम-क्रोध, मद-लोभ आदि दूषित विचारों से अपने अंतस को मुक्त कर नई जीवन ऊर्जा से कर्मपथ पर गतिमान हों। वैदिक साहित्य में उल्लेख मिलते हैं कि प्राचीन काल में हमारे ऋषि-मनीषी इस महीने में विभिन्न उच्चस्तरीय आध्यात्मिक साधनाएं करते थे। रामायणकाल में तीर्थराज प्रयाग में महर्षि भारद्वाज का आश्रम एवं साधना आरण्यक था, जहां समूचे आर्यावर्त के जिज्ञासु साधक एकत्रित हो संगमतट पर एक मास का कल्पवास करते थे। आज भी माघ मास में प्रयाग की पुण्यभूमि में होने वाले आध्यात्मिक समागम में बड़ी संख्या में लोग कल्पवास के लिए जुटते हैं।

काय पो चे

मकर संक्रांति देश के प्रत्येक राज्यों में मनाई जाती है और मनाने की परम्परा भी अलग-अलग है, लेकिन पतंग उड़ाने की परम्परा लगभग सभी राज्यों में एक जैसा ही है। इस दिन आकाश में रंग-बिरंगे पतंग उड़ती देखी जाती है। बच्चे से लेकर वृद्ध या फिर महिलाएं पतंगबाजी कर मचलते देखे जाते हैं।

त्यौहार

डॉ. सौरभ मालवीय

मकर संक्रांति का पावन पर्व देश के विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न नामों के साथ हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस अवसर पर देशभर में पतंगें उड़ाई जाती हैं। मकर संक्रांति पर पतंग उड़ाना केवल एक मनोरंजन नहीं है अपितु इसका धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक महत्व भी है।

धार्मिक महत्व

मकर संक्रांति पर पतंग उड़ाने की यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार श्रीराम की बाल्य अवस्था में अयोध्या में मकर संक्रांति के अवसर पर हर्षोल्लास से पर्व मनाया जा रहा था। उत्सव में सम्मिलित होने के लिए बाल हनुमानजी को आमंत्रित किया गया था। बालक श्रीराम ने अपने भाइयों और मित्रों के साथ पतंग उड़ाई थी।

राम इक दिन चंग उड़ाई। इंद्रलोक में पहुंची जाई।।
जासु चंग अस सुंदरताई। सो पुरुष जग में अधिकाई।।

मान्यता है कि श्रीराम ने एक दिन पतंग उड़ाई, जो इंद्रलोक में जा पहुंची। वहां स्वर्ग के राजा इंद्र के पुत्र जयंत की पत्नी ने उसे पकड़ लिया। पतंग को देखकर वे उस सुंदर पतंग एवं पतंग उड़ाने वाले के विषय में विचार करने लगीं कि जब पतंग इतनी सुंदर है तो इसे उड़ाने वाला कितना सुंदर होगा? उन्होंने पतंग पकड़कर उसे अपने पास रख लिया। उनका विचार था कि पतंग उड़ाने वाला अपनी पतंग लेने के लिए अवश्य आएगा। यह विचार कर वे पतंग उड़ाने वाले की प्रतीक्षा करने लगीं। जब पतंग अदृश्य हो गई तो श्रीराम ने पतंग की खोज के लिए बाल हनुमानजी को भेजा।

तिन तब सुनत तुरंत ही, दीन्ही छोड़ पतंग।
खेंच लइ प्रभु बेग ही, खेलत बालक संग।।

बाल हनुमानजी पतंग की खोज में आकाश में उड़ते हुए इंद्रलोक पहुंच गए। उन्होंने देखा कि एक महिला अपने हाथ में पतंग पकड़े खड़ी है। उन्होंने महिला से पतंग देने का विनम्र आग्रह किया। इस पर जयंत की पत्नी ने पूछा कि यह पतंग किसकी है? वे पतंग उड़ाने वाले को देखना चाहती हैं। यह सुनकर हनुमानजी अयोध्या लौट आए और सम्पूर्ण वृत्तांत श्रीराम को कह सुनाया।

यह सुनकर श्रीराम ने हनुमानजी को वापस इंद्रलोक भेजा और जयंत की पत्नी को संदेश भेजा कि वे उन्हें चित्रकूट में अवश्य दर्शन देंगे, तब तक उन्हें प्रतीक्षा करनी होगी। हनुमानजी ने यह संदेश जयंत की पत्नी तक पहुंचा दिया और अपनी पतंग लेकर वापस आ गए। इस प्रसंग को मकर संक्रांति से जोड़ा जाता है और कहा जाता है कि इसी दिन से पतंग उड़ाने की परम्परा प्रारम्भ हुई। इस प्रकार यह प्रसंग मकर संक्रांति पर पतंग उड़ाने की प्राचीनता एवं इसके आध्यात्मिक महत्व को दर्शाता है। श्रीराम द्वारा पतंग उड़ाना एवं पतंग का आकाश में ऊंचा जाना आत्मिक उन्नति का प्रतीक माना जाता है। पतंगों को आकाश की ओर उड़ाना इस बात का प्रतीक है कि हम देवताओं का स्वागत कर रहे हैं और उन्हें धन्यवाद दे रहे हैं। यह भी मान्यता है कि सूर्य देव अपने पुत्र शनि देव से मिलने मकर राशि में प्रवेश करते हैं, जो पिता-पुत्र के मतभेद दूर होने और समृद्धि का प्रतीक है।

सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व

मकर संक्रांति पर पतंग उड़ाने का सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व भी है। पतंग श्रीराम की परम्परा का संवाहक है। इसके माध्यम से लोगों को अपनी प्राचीन संस्कृति को जानने एवं समझने का अवसर मिलता है और बच्चे अपनी प्राचीन गौरवशाली परम्परा

से जुड़ते हैं। इस प्रकार हमारी प्राचीन परम्पराएं जीवित रहती हैं।

बच्चे एवं युवा अपने परिवार के सदस्यों और मित्रों के साथ मिलकर पतंग उड़ाते हैं। इससे उनके आपसी सम्बंध गहरे होते हैं। पतंगबाजी के दौरान लोग अपनी छतों और मैदानों में एकत्रित होते हैं। वे गीत-संगीत बजाते हैं और साथ मिलकर उत्सव मनाते हैं। यह पर्व आपसी भेदभाव मिटाकर समाज को एक साथ लाने का कार्य करता है। इससे समाज में आपसी सम्बंध और सद्भाव बढ़ता है।

पतंग प्रसन्नता, स्वतंत्रता एवं आशा की प्रतीक है। आकाश की ओर ऊंची उड़ती पतंगें इस बात का संदेश देती हैं कि मनुष्य को भी अपने जीवन के लक्ष्यों को ऊंचा रखना चाहिए। यदि वह प्रयास करे तो पतंग की भांति आकाश को स्पर्श कर सकता है।

मकर संक्रांति के समय खेतों में नई फसल खड़ी होती है। अपनी फसल को देखकर किसान प्रसन्नता से झूम उठते हैं। यह पर्व नई फसल के आगमन का उत्सव मनाने एवं सूर्य देव को धन्यवाद देने का प्रतीक है। इस पर्व पर लोग तिल और गुड़ से बने मिष्ठान बांटते हैं और एक दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं। तिल और गुड़ स्वास्थ्य के लिए उत्तम हैं।

वैज्ञानिक महत्व

मकर संक्रांति पर पतंग उड़ाने का वैज्ञानिक महत्व भी है। मकर संक्रांति का पर्व शीतकाल के अंत में आता है। इस समय शीत ऋतु समाप्त हो रही होती है और वसंत ऋतु प्रारम्भ होती है। शीतकाल में शरीर धूप से दूर रहता है, जिससे त्वचा एवं हड्डियों से सम्बंधित समस्याएं हो सकती हैं। पतंग उड़ाने के समय लोग अनेक घंटों तक सूर्य के प्रकाश में रहते हैं। इससे उनके शरीर को भरपूर विटामिन-डी मिलता है, जो हड्डियों के लिए अति आवश्यक है। विटामिन-डी शीतकाल के संक्रमण से लड़ने में सहायता प्रदान करता है। आयुर्वेद के अनुसार संक्रांति के समय सूर्य की किरणें शरीर के लिए औषधि का कार्य करती हैं। पतंग उड़ाते समय सीधी धूप शरीर पर पड़ती है, जिससे त्वचा के कीटाणु नष्ट होते हैं और शरीर में नई ऊर्जा का संचार होता है।

आर्थिक महत्व

मकर संक्रांति पर पतंग उड़ाने का सम्बंध अर्थव्यवस्था से भी है। मकर संक्रांति पर पतंगों की मांग बहुत बढ़ जाती है। लोग जमकर पतंगों का क्रय करते हैं। बाजारों में प्रत्येक वर्ष पारम्परिक रंग-बिरंगी पतंगों के साथ-साथ देशभक्ति से जुड़ी पतंगें लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। मकर संक्रांति के पश्चात गणतंत्र दिवस आता है, इसलिए भी मकर संक्रांति पर देशभक्ति से सम्बंधित पतंगों की मांग अधिक बढ़ जाती है। पतंग की मांग बढ़ने से इनका उत्पादन बढ़ता है, जिससे रोजगार का सृजन होता है।

•••

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक

" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित

'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

पितांबरी®
हेल्थकेअर डिवीजन
गोमूत्र प्लस कॅप्सूल के
आश्चर्यजनक लाभ !
पितांबरी
आयुर्वेद में पहली बार
गोमूत्र प्लस
१०×१० कॅप्सूल्स । जी.एम.पी. प्रमाणित
Product of India
गोमूत्र प्लस कॅप्सूल = त्रिफला (आंवला + बहेड़ा + हरीतकी) + गोमूत्र
=
गोमूत्र प्लस के लाभ
• कब्ज, हृदयरोग, मधुमेह जैसी बीमारियों में लाभदायक
• शरीर डिटॉक्स करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, वजन को नियंत्रित रखता है
• कैंसर जैसी गंभीर बीमारी में फायदेमंद
• अनचाही गंध और स्वाद नही
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Contact: 9322971635, CRM: 022-6703 5564 / 5699,
Toll Free: 18001031299 | CIN: U52291MH1989PTC051314 | Shop Online: www.pitambari.com/shop

भूख की पीर

माह का त्योहार मनोहर
गंगा स्नान करते सभी
सुबह के पहले प्रहर,
सूर्य का ध्यान और पूजा।
हर प्रांत में मनाया
जाने वाला ऐसा
त्योहार न दूजा।।

अलग-अलग है रीत
कहीं बने हैं तिल लड्डु
तो कहीं बने हैं खीर।
कहीं पतंग संग धूम है
और घी खिचड़ी का साथ।
कहीं बने चूरमा-बाटी
और घी दाल का स्वाद।।

पर, एक ओर देखती
मैं उन बेजुबानों की भीड़।
जो हर घर झांके, इस आस में
कि मिटें भूख की पीर।।

इन त्योहारों पर, हम संकल्प लें
कुछ भला इनका भी हो जाए।
हम भी भूखे ना सोए,
और ना ही कोई भूखा
हमारे द्वार से जाए।।

- प्रकाश कंवर

माटी की खुशबू आती है याद...

कट गई फसलें भर गए खलिहान
मन खिल गए हैं फूल की भांति।
धान तिल गुड़ मूंगफली की खुशबू
अब त्योहार मनाएं मकर संक्रांति।।

दिनकर प्रविष्टित मकर राशि में
शुभ लग्न शुरू आराधना कर लें।
उत्सव मनाने इस उत्तरायण का
गंगा सागर की ओर चलें।।

पेंच पतंगों के लड़ जाएं
उमंग-उत्साह असीमित हो।
पोंगल में जल्लीकट्टू खेलें या
लोहड़ी की पारंपरिक रीतिक हो।।

मिश्रित अन्न से पकती खिचड़ी
सोंधी सुवास और अप्रतिम स्वाद।
सम्पूर्ण देश का अपना है पर्व यह
माटी की खुशबू आती है याद।।

- श्रुत कीर्ति अग्रवाल

इससे जुड़ा आपस का प्यार...

मकर संक्रांति महज सूर्य का राशि परिवर्तन ही नहीं
एक भौगोलिक घटना भी है।
सूर्य की दिशा का बदलना
और सर्द रातों का सिमटना भी है।।

इससे जुड़ी अनेक पौराणिक कथाएं।
इसने जोड़ी गंगा की सागर की ओर धाराएं।।

पंचतत्व का जल महत्वपूर्ण हिस्सा।
संक्रांति में नदी स्नान से जुड़ा कई किस्सा।।

तिल लघुता का प्रतीक, यह संक्राति से जुड़ा है सटीक।
तिल का सेवन, तिल का दान
तिल के साथ कीजिए स्नान।।

तिल तिल कर जुड़ता है धन।
तिल-तिल कर जिम्मेवारियों का होता वहन।।

संक्रांति को बनाइए खास।
इसमें घोलिए गुड़ की मिठास।।

अनाज, मसाले और सब्जियों से मिल कर बनती खिचड़ी।
इससे आपसी ताल-मेल की भावना जुड़ी।।

त्योहार नहीं महज व्यवहार।
इससे जुड़ा आपस का प्यार।।

- परिणीता सिन्हा 'स्वयंसिद्धा'

हिंदू सम्मेलनों के माध्यम से हिंदू एकता और सामाजिक समरसता का संदेश प्रभावी ढंग से समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचता है तो भारत अधिक सशक्त, संतुलित और समन्वित राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ेगा। हिंदू सम्मेलन इस दिशा में एक मजबूत और दूरगामी कदम सिद्ध हो सकते हैं।

हिंदू सम्मेलनों से विचारों का संदेश

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में संघ के नेतृत्व में सकल हिंदू समाज द्वारा देश के अलग-अलग शहरों, जिलों, मंडलों-बस्तियों में एक लाख व्याख्यान एवं हिंदू सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत स्वयं या संघ के सभी वरिष्ठ पदाधिकारी हिंदू सम्मेलनों को सम्बोधित कर रहे हैं। संघ की इस विचार यज्ञ में समाज अपनी सकारात्मक आहूति देकर अपने युगधर्म का पालन भी कर रहे हैं। पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत संघ के शताब्दी वर्ष में संवाद यात्रा पर हैं। नई दिल्ली से प्रारम्भ हुई यह यात्रा बेंगलुरु, कोलकाता के बाद अब भोपाल पहुंची है। इस दौरान डॉ. मोहन जी भागवत समाज के एक-एक वर्ग के प्रमुख जनों से न केवल भेंट करते हैं बल्कि उनके प्रश्न और आशंकाओं का भी समाधान करते हैं।

संघ प्रमुख के व्याख्यान या हिंदू सम्मेलनों में विदेशी राजनायिक और देश में हर वर्ग के विशिष्ट जन अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज करा रहे हैं। यह 100 वर्षों में संघ के प्रति विश्वास और स्वीकार्यता को दर्शाता है। इन सम्मेलनों के माध्यम से लोगों से संघ के विषय में सीधी बात की जा रही है।

पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत अपने सम्बोधन में लोगों को देश व समाज निर्माण में स्वयं की भूमिका तय करने में सहायता करते हैं और संगठन को लेकर जिज्ञासा का समुचित समाधान भी करते हैं। संघ अपनी शताब्दी यात्रा के इस पड़ाव पर पहले उपेक्षा, फिर विरोध और विस्तार के चरण के बाद अब वह अनुकूलता के काल में प्रवेश कर चुका है।

राघव कुमार झा

संघ के पास आज जो शक्ति है, उसको लेकर लोगों से सम्पर्क और संवाद बढ़ाकर देश को पुन: एकता के सूत्र में बाधा जा रहा है। हिंदू सम्मेलनों के दौरान स्वयंसेवकों को पंच परिवर्तन के विषय में विस्तार से जानकारी दी जा रही है। इन 5 संकल्पों में स्व का बोध, कुटुम्ब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, नागरिक कर्तव्य और पर्यावरण संरक्षण शामिल हैं। ये पांचों संकल्प समाज जागरण की रीढ़ हैं और इन्हीं मूल्यों के माध्यम से समाज को संगठित तथा राष्ट्र को सशक्त बनाया जा सकता है। भारतीय समाज की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता में निहित एकता है। हजारों वर्षों से विकसित हुई भारतीय सभ्यता और संस्कृति ने सनातन परम्परा के भीतर अनेक पंथों, जातियों, भाषाओं और जीवन शैलियों को आत्मसात करते हुए एक साझा सांस्कृतिक चेतना का निर्माण किया है। यही चेतना भारत को एक राष्ट्र के रूप में जोड़ती रही है, परंतु आधुनिक काल में सामाजिक विभाजन, जातिगत भेदभाव, उपभोक्तावादी सोच और विदेशी प्रभावों ने इस ऐतिहासिक एकता को कई बार चुनौती दी है। ऐसे समय में हिंदू सम्मेलन सामाजिक पुनर्जागरण के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरकर सामने आए हैं।

भारत माता पूजन, सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ, विचार गोष्ठियां और विशेष रूप से समरस भोज जैसे आयोजन इन सम्मेलनों की पहचान बनते जा रहे हैं। समरस भोज में विविध जातियों और वर्गों के लोग एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जो सदियों पुराने भेदभाव को तोड़ने का सशक्त और व्यवहारिक प्रयास है। इन आयोजनों का प्रभाव केवल धार्मिक या सांस्कृतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, सामाजिक स्तर पर इसके बहुआयामी परिणाम

दिखाई दे रहे हैं। जातिगत दीवारें धीरे-धीरे कमजोर हो रही हैं। युवा पीढ़ी में संस्कार, आत्मविश्वास और राष्ट्रभक्ति की भावना सुदृढ़ हो रही है। पर्यावरण संरक्षण और स्वदेशी जैसे विषयों पर समाज में नई चेतना विकसित हो रही है। साथ ही इन सम्मेलनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सामाजिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेत है। हिंदू सम्मेलन केवल धार्मिक आयोजन नहीं हैं बल्कि वे हिंदू समाज को संगठित करने के साथ-साथ सामाजिक समरसता, समानता और सद्भाव को व्यवहार में उतारने का प्रयास हैं। इन सम्मेलनों में जाति, वर्ग और क्षेत्र के भेद से ऊपर उठकर समाज को जोड़ने की भावना दिखाई देती है।

हिंदू सम्मेलनों की परम्परा भारत में नई नहीं है। प्राचीन काल से ही कुम्भ मेले, धर्म संसदें और संत सम्मेलनों ने भारतीय समाज को वैचारिक और सांस्कृतिक रूप से एकजुट रखने का कार्य किया है। आधुनिक काल में इस परम्परा को संगठित स्वरूप देने का कार्य रा. स्व. संघ कर रहा है। इसी क्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सामाजिक समरसता को अपने कार्य का मूल आधार बनाया। संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार से लेकर वर्तमान पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत तक, संघ नेतृत्व यह मानता रहा है कि हिंदू समाज की वास्तविक शक्ति उसकी एकता और सामाजिक समभाव में निहित है।

वर्तमान समय में हिंदू सम्मेलनों का विस्तार अभूतपूर्व है। यह विस्तार अपने आप में इस बात का संकेत है कि समाज के भीतर एकजुट होने की आकांक्षा कितनी गहरी है। पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने हैदराबाद में एक सम्मेलन के दौरान कहा था कि भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए हिंदू समाज का संगठित और समरस होना आवश्यक है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि राजनीति प्रायः समाज को विभाजित करती है, जबकि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आधार ही स्थायी एकता का निर्माण कर सकते हैं। इसी विचारधारा से प्रेरित होकर हिंदू सम्मेलन समाज को नेतृत्व, आत्मविश्वास और उत्तरदायित्व के भावना प्रदान कर रहे हैं। कुल मिलाकर भारत में आयोजित हो रहे हिंदू सम्मेलन सामाजिक समरसता के भाव को मजबूत करने में निर्णायक भूमिका निभाते दिख रहे हैं। ये आयोजन न केवल हिंदू समाज को संगठित कर रहे हैं बल्कि पूरे भारतीय समाज को सांस्कृतिक एकता, सह-अस्तित्व और सद्भाव का संदेश दे रहे हैं। ●●●

संघ शाखा व्यक्ति के भीतर सुप्त पड़ी ऊर्जा और आत्मविश्वास को जागृत करती है। प्रार्थना, गीत और बौद्धिक के माध्यम से मन में राष्ट्र, समाज और संस्कृति के प्रति सकारात्मक भाव उत्पन्न होते हैं। यह चैतन्य केवल भावनात्मक नहीं होता बल्कि व्यवहार में भी परिलक्षित होता है।

संघ शाखाएं: व्यक्ति निर्माण की कर्मभूमि

संघ शाखाओं का व्यक्ति निर्माण में योगदान को चिन्हित करते हुए, रंगा हरि जी लिखते हैं कि संघकार्य में संघस्थान परम प्रधान है। वहीं कार्यक्रमों द्वारा स्वयंसेवकों का गढ़न होता है। वहीं विवेकानंद कथित प्रदूषित रक्त को विशुद्ध बनाया जाता है, दिग्भ्रमित मन दिशाबोध से प्रबुद्ध बनाया जाता है, व्यक्तिकेंद्रित भाव राष्टकेंद्रित भाव में बदला जाता है, व्यक्ति समष्टि में रूपायित होता है। संघ स्थान राष्ट्रानुकूल संस्कार संक्रमित करने का सृजन स्थान है।

संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं, फिर भी लोग इस बात से आश्चर्यचकित हैं कि दैनिक शाखा जैसा सरल साधन कैसे ऐसे उत्कृष्ट आदर्शवादी, देशभक्तों को तैयार कर सकता है, जो मातृभूमि के लिए अपनी सारी ऊर्जा और प्रतिभा समर्पित करने को तैयार हैं। मातृभूमि के सम्मान की रक्षा के लिए यदि आवश्यकता पड़े तो अपने प्राणों की आहुति देने को भी तैयार हैं। वास्तव में यही संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार की असाधारण दूरदर्शिता, कौशल और ध्येय की पवित्रता की पहचान है।

अपनी स्थापना के समय से ही संघ का जोर 'दैनिक शाखा' चलाने पर रहा है। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार मानते थे कि प्रत्येक धर्मनिष्ठ एवं राष्ट्रवादी नागरिक को रोजमर्रा की जिंदगी से कुछ समय निकालकर राष्ट्र एवं संस्कृति के चिंतन हेतु सामने आना चाहिए। शाखाओं के माध्यम से संघ हिंदू समाज को संगठित करने एवं उसे उसके वास्तविक कर्तव्यों के प्रति सचेत करने का प्रयास भी करता है। शाखा स्वयंसेवकों की दिनचर्या का एक अंतर्निहित हिस्सा है और इसके माध्यम से संगठन के साथ सम्बंध को मजबूत करने में सहायता भी मिलती है। स्वयंसेवकों को शाखा में भाग लेने से संस्कार मिलते हैं और प्रतिदिन स्वयंसेवक अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में कई नकारात्मक चीजों से प्रभावित होते हैं।

सचिन तिवारी

जिस तरह से स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए भोजन, खाने या पीने के पानी के बर्तन को प्रत्येक दिन साफ करना पड़ता है, उसी तरह एक मानव शरीर को स्वयं में अच्छे मूल्यों के स्तर को बनाए रखने के लिए सकारात्मक शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अनुभवों से गुजरना पड़ता है। शाखा का नामकरण करने की परम्परा रही है और प्रत्येक शाखा का नाम आम तौर पर अतीत के महान भारतीयों में से एक के नाम पर रखा जाता है। संघ की शाखाओं के नाम भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, अभिमन्यु, अर्जुन आदि के नाम पर हैं। स्वयंसेवकों को शारीरिक तौर पर बलिष्ठ बनाने हेतु संघ कार्यपद्धति में व्यायाम एवं अखाड़ों को भी शाखाओं में शामिल किया गया है। डॉ. हेडगेवार स्वयं संघ की शुरुआत के पूर्व नागपुर में शिवराम गुरु के अखाड़े पर जाया करते थे। उनके अपने अनुभव इस प्रकार के थे कि अखाड़ों पर राष्ट्रवादियों का एकत्रीकरण होता है। वे भारत की समृद्ध परम्पराओं को भी पूरी तरह जानते थे, जिसमें अखाड़े विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों से जुड़े साधु संतों के सैनिक दस्ता भी रहे हैं।

प्रारम्भ में नागपुर में मोहिते के बाड़े के पास नागपुर व्यायामशाला में संघ के स्वयंसेवक एकत्रित होकर कसरत करते थे। इसके बाद डॉ. हेडगेवार के मन में स्वयंसेवकों को बौद्धिक रूप से भी मजबूत करने का विचार आया, उन्होंने सोचा कि ऐसा स्थान होना चाहिए जहां सभी स्वयंसेवक एक साथ बैठकर बौद्धिक विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। शीघ्र ही शाखाओं में बौद्धिक विमर्श की प्रथा भी प्रारम्भ हो गई। जिसके माध्यम से स्वयंसेवकों को उनके गौरवशाली इतिहास एवं महान सांस्कृतिक वैचारिक विरासत के विषय में बताया जाता ताकि उन्हें औपनिवेशिक शासन के परे भारत की समृद्धता का परिचय कराया जा सके। नित्य शाखा जाने से व्यक्ति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा प्रारम्भ की गई राष्ट्र यज्ञ के

संस्कारों से स्वयं ही परिपुष्ट हो जाता है। एक सामान्य व्यक्ति, स्वतः संघ कार्यों को अपना ध्येय बनाकर, अपने सम्पूर्ण जीवन को राष्ट्र के प्रति समर्पित कर देता है। संघ का उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण कर राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाना है। नित्य शाखा पर जाने से स्वयंसेवक साधारण से असाधारण बन जाते हैं। उनके अंदर स्वतः असाधारण क्षमता विकसित हो जाती है। श्री गुरुजी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा को संघ-कार्य की मूल इकाई माना। उनके विचारों में शाखा केवल व्यायाम या बैठक नहीं बल्कि व्यक्ति-निर्माण और राष्ट्र-निर्माण की प्रयोगशाला थी। श्री गुरुजी के अनुसार शाखा का प्रमुख लक्ष्य ऐसे संस्कारित, अनुशासित और निस्वार्थ स्वयंसेवक तैयार करना है, जिनका चरित्र मजबूत हो और जिनमें राष्ट्र के प्रति समर्पण हो। वे मानते थे कि राष्ट्र की उन्नति का आधार व्यक्ति का चरित्र होता है।

वास्तव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण का एक संगठित और नियमित मंच प्रदान करती हैं। शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास के माध्यम से वे ऐसे नागरिक गढ़ने का प्रयास करती हैं जो समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी हों। चाहे विचारों से सहमति हो या असहमति, यह स्पष्ट है कि शाखा-आधारित प्रणाली ने अनेक व्यक्तियों के व्यक्तित्व और सामाजिक सहभागिता पर प्रभाव डाला है। बालासाहब देवरस जी भी मानते थे कि संघ का वास्तविक जीवन शाखा में ही प्रकट होता है। संघ शाखा केवल एक दैनिक गतिविधि नहीं बल्कि जीवन को संतुलित, सशक्त और सार्थक बनाने की प्रयोगशाला है। नववर्ष का शुभारम्भ यदि हम प्रतिदिन शाखा जाने के संकल्प से करें तो यह संकल्प हमारे जीवन की दिशा ही बदल सकता है। शाखा के बिना संघ की कल्पना अधूरी है क्योंकि यहीं स्वयंसेवकों का संस्कार, अनुशासन और विचार निर्माण होता है।

आज जब तनाव प्रत्येक आयु वर्ग की समस्या बन चुका है, चाहे वे विद्यार्थी हों, युवा हो या गृहस्थ। मोबाइल, सोशल मीडिया और अनियंत्रित दिनचर्या ने मन को अशांत कर दिया है। संघ शाखा में होने वाले शारीरिक व्यायाम, खेल, सूर्य नमस्कार और योगाभ्यास शरीर को स्वस्थ रखते हैं और मन को प्रसन्नता प्रदान करते हैं। खुली हवा में सामूहिक अभ्यास से न केवल शरीर में स्फूर्ति आती है बल्कि मानसिक तनाव भी स्वतः ही दूर हो जाता है। शाखा में जाने वाला स्वयं को अकेला नहीं बल्कि एक बड़े परिवार का हिस्सा अनुभव करता है। 'मैं' से 'हम' की यात्रा यहीं से प्रारम्भ होती है। यह सामूहिकता व्यक्ति को आत्मकेंद्रित सोच से बाहर निकालकर समाजोन्मुख बनाती है। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

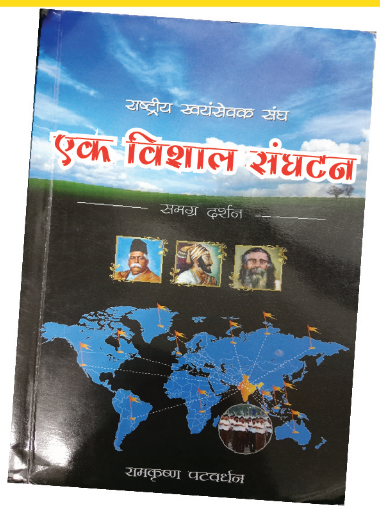

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK**

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क – 9594991884 **Email : hindivivekvargani@gmail.com**

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

राष्ट्र आराधना की प्रेरणा देते संघ गीत

संघ गीत || Sangh Geet ||

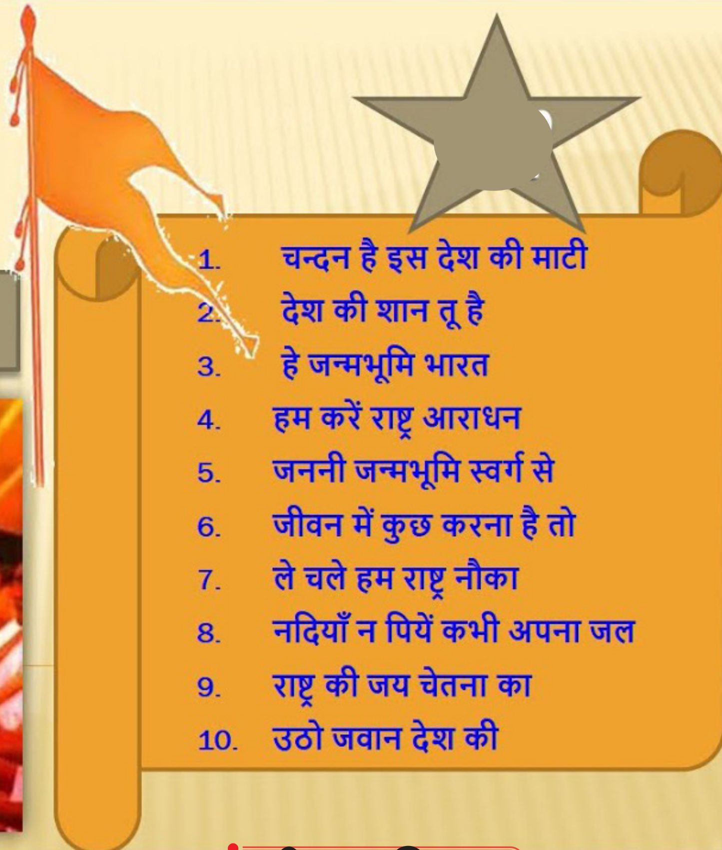

देशभक्ति

संघ के गीत जो देश प्रेम की भावना से ओत-प्रोत होते हैं, प्रत्येक स्वयंसेवकों द्वारा संघ शाखा में कई गीत गाए जाते हैं। संघ गीत भारतवर्ष में बोली जाने वाली सभी भाषाओं में लिखे और गाए जाते हैं। यहां तक कि देश-विदेश की सभी शाखाओं पर सभी भारतीय भाषाओं के गीत गाए जाते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिंदू समाज को संगठित कर उसे शक्तिशाली, सामर्थ्य सम्पन्न बनाना चाहता है। संघ का कार्य एक सार्वजनिक कार्य है। कार्यकर्ता इन्हीं शाखाओं पर तैयार या उत्पादित होते हैं। संघस्थान की मिट्टी में कार्यकर्ताओं की फसल उगती है। 60 मिनट की सुनियोजित शाखा में शक्ति की उपासना, अनुशासन, विजिगीषु वृत्ति और देशभक्ति की भावना स्वयंसेवक में विकसित होती है।

शाखा में योग, सूर्यनमस्कार, दौड़, दंड प्रहार, प्राथमिक समता, खेलकूद, देशभक्ति के गीत, अमृत वचनों के साथ मातृभूमि की प्रार्थना की जाती है। संघ के गीत राष्ट्र आराधना की प्रेरणा देते हैं। ये गीत संदेशयुक्त, प्रेरणादाई और हृदयग्राही होते हैं। शब्द इतने सरल, स्पष्ट, मन को छूनेवाले होते हैं तथा सामूहिक गायन के रूप में गाते-गाते हृदय में भावना भर कर कभी-कभी आंसू भी छलका देते हैं। इसकी एक ही धुन होती है जो जय-जय भारत के अर्थ समेटे होती है। समूह गान होने से हर कार्यकर्ता इसको निःसंकोच भाव से स्वतः गाना, गुनगुनाना सीख जाता है। उच्चस्वर में वह बेझिझक होकर गाने लगता है। धीरे-धीरे वह सबके सामने खड़े होकर सामने गाता और गाते हुए दूसरों को अनुसरण कराना सीख जाता है। यह गीत कौन लिखता है, कब लिखता है, कहां लिखता है, यह पता ही नहीं चलता है

अशोक कुमार सिन्हा

क्योंकि रचनाकार स्वयंसेवक व प्रचारकों में से ही होते हैं। वे कभी भी अपना नाम उजागर नहीं करते या कहिए कि वे श्रेय नहीं लेना चाहते हैं। इन गीतों में देशप्रेम की अभिव्यक्ति, मातृभूमि से गहरा प्रेम, सम्मान, समर्पण, त्याग और बलिदान की भावना भरी होती है। इन गीतों को गणगीत कहा जाता है। कुछ स्वयंसेवक जिनका स्वर बहुत अच्छा होता है वे अभ्यास करके संघ उत्सवों या विशेष अवसरों पर मुख्य वक्ता के भाषणों, जिन्हें संघ में बौद्धिक कहा जाता है, मार्गदर्शक बिंदु या प्रस्तावना के रूप में एकल गीत के रूप में भी गाए जाते हैं। यह गीत कोरस नहीं होता। इस गीत को एक स्वयंसेवक ही पूर्ण आत्मविश्वास के साथ व्यवस्थित अभ्यास के बाद बिना किसी पार्श्व संगीत के गाता है। उल्लेखनीय है कि संघ के किसी गीत में किसी भी प्रकार के वाद्यसंगीत के उपकरणों का प्रयोग नहीं किया जाता है। सभी गीत सुर, ताल, लय, छंद एवं संगीत के शास्त्रीय पद्धतियों से युक्त होते हैं। संघ गीत भारतवर्ष में बोली जाने वाली सभी भाषाओं में लिखे और गाए जाते हैं और देश-विदेश की सभी शाखाओं पर सब भारतीय भाषाओं के गीत गाए और दुहराए जाते हैं। संस्कृत और हिंदी के गीत अधिकांश संख्या में सभी भाषा-भाषी प्रदेशों के स्वयंसेवक निश्छल भाव से गाते मिल जाएंगे। स्वयंसेवकों के अंदर स्वभाव से ही भाषा, प्रांत, जाति, क्षेत्रीयता का भेद संस्कारवश नहीं पनपने पाता तथा वे अपने अंदर सभी भाषाओं के प्रति आदर और प्रेम की भावना स्वभाववश रखने लगते हैं।

सामान्यतः संघ गीतों को मातृ-वंदना, राष्ट्र-अर्चना, केशव माधव वंदन, पथ संचलन गीत, सहगान, एकल गान, जनजागरण का शंखनाद करते गीत, संघ उत्सवों के भाव अनुरूप गीत तथा प्रासंगिक एवं विविध गीतों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। कुछ संघ गीतों का सहजरूप में टीवी चैनलों के लिए बनाई गई फिल्मों में भी प्रयोग सामयिक संदर्भों के उपयोगिता की दृष्टि से किया गया है, जो संघ गीतों के महत्व का प्रतीक है। जैसे उदाहरण स्वरूप प्रसिद्ध टीवी सीरियल चाणक्य में एक पुराने संघ गीत 'हम करे राष्ट्र आराधन, तन से मन से धन से' को तक्षशिला के छात्रों द्वारा भगवा ध्वज हाथ में लहरा कर संघ शाखाओं पर गाए जाने वाले अनेक गीत हैं, जो राष्ट्र के लिए जीने की प्रेरणा देते हैं।

धर्म के लिए जिएं समाज के लिए जिएं।
ये धड़कनें ये श्वास हो पुण्यभूमि के लिए।
कर्म भूमि के लिए।।

इसी प्रकार का दूसरा गीत है-

आर्य भूमि में गूंज उठा फिर जन-जन का आह्वान।
भरत भूमि के साथ विश्व का करना है कल्याण।
जागे वीर जवान- जागे वीर जवान।।

एक अन्य गीत है -

एक संस्कृति एक धर्म है, एक हमारा नारा।
एक भारती की संतति हम, भारत एक हमारा।।

इसी प्रकार यह गीत भी बहुत लोकप्रिय था-

नमन है इस मातृभू को, विश्व का सिरमौर भारत।
तप तपस्या साधना का, शौर्य का परिणाम भारत।।
जीवन पुष्प चढ़ायेंगे, मां की ज्योति जगाएंगे।
मां की रक्षा हित हम शत-शत, हिंदू बलि हो जाएंगे।।

सामाजिक समरसता को प्रेरित करता यह गीत बहुत प्रसिद्ध है-

पथ का अंतिम लक्ष्य नहीं सिंहासन चढ़ते जाना,
सब समाज को लिए साथ में आगे है बढ़ते जाना।।

इसी प्रकार का एक गीत है-

हिंदु जगे तो विश्व जगेगा, मानव का विश्वास जागेगा।
भेद भावना तमस हटेगा, समरसता अमृत बरसेगा।।

संस्कृत भाषा में एक गीत सबको स्मरण होगा-

मनसा सततम स्मरणीयम, बचसा सततम वदनीयम। लोकहितम मम करणीयम।।

एक गीत जो बचपन में शरीर में रक्तसंचार को बढ़ा देता था-

रक्त शिराओं में राणा का, रह-रह आज हिलोरे लेता।
मातृभूमि का कण-कण तृण-तृण हमको आज निमंत्रण देता।।

दूसरा गीत है- यह हिमालय सा उठा, मस्तक न झुकने पाएगा।
रोक दूंगा मैं प्रभंजन, जो प्रलय के गीत गाता।।

पंजाबी भाषा का एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था -

पिता वारया ते लाल चारे वारे,
ओ हिंदू तेरी शान बदले।
जन्म गुरांदा पटने साहिबदा,
आनंदपुर डेरा लाया,
ओ हिंदु तेरी शान बदले।।

संघ गीत की अनेकों श्रृखलाएं है जिनको सुनते गाते हम संस्कारित हुए हैं। भावी पीढ़ी नए तकनीकी से दृश्य श्रव्य माध्यम से इन गीतों को देखेगी, सुनेगी और प्रेरणा लेगी।

●●●

आशीष कुमार 'अंशु'

दिल्ली के मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में 2 से 4 जनवरी 2026 तक आयोजित तीन दिवसीय 'दिल्ली शब्दोत्सव 2026' भारतीय साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में एक नया अध्याय लिख गया। दिल्ली सरकार की हिंदी अकादमी और सुरुचि प्रकाशन के संयुक्त तत्वावधान में यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

भारत बोध: साहित्य का विराट संगम

शब्दोत्सव का भव्य शुभारम्भ 2 जनवरी को दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता ने किया। दीप प्रज्ज्वलन और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ शुरू हुए कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा और संस्कृति मंत्री कपिल मिश्रा भी उपस्थित थे। मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि यह आयोजन भारत के बौद्धिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक है- वैदिक काल से डिजिटल युग तक की यात्रा का उत्सव। मंत्री कपिल मिश्रा ने इसे 'वैचारिक आतंकवाद पर सर्जिकल स्ट्राइक' बताया, जो युवाओं को जिहादी और नक्सली सोच से मुक्त कर राष्ट्रवाद से जोड़ेगा।

रा. स्व. संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आम्बेकर ने उद्घाटन सत्र में शब्दों की शक्ति पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि शब्द हमारे पथ-प्रदर्शक हैं और यह उत्सव भारत की सांस्कृतिक चेतना को जगाने वाला है। पहले दिन विभिन्न सत्रों में साहित्य, कला और युवा भागीदारी पर चर्चा हुई। ओपन माइक स्टेज पर युवाओं ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं, जबकि सांस्कृतिक मंच पर भरतनाट्यम, कथक और भजन संध्या ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। दिल्ली-एनसीआर के 40 विश्वविद्यालयों के छात्रों की भागीदारी ने उत्सव को युवा ऊर्जा से भर दिया।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पूर्व निदेशक धर्मवीर शर्मा ने कुतुब मीनार को प्राचीन वेधशाला बताते हुए विवादास्पद दावे किए। शर्मा ने कहा कि कुतुब मीनार का आधार आयताकार है, यह 25 इंच दक्षिण की ओर झुका हुआ है और 21 जून को सूर्य दक्षिणायन में आने पर इसकी छाया नहीं पड़ती। इसमें 27 खिड़कियां और छठी शताब्दी के श्लोक मिले हैं, साथ ही एक पत्थर पर गणेश जी की आकृति भी। उन्होंने इसे विष्णु वेधशाला का हिस्सा बताया। इस दावे ने व्यापक चर्चा छेड़ दी और काशी के संतों ने मांग उठाई कि कुतुब मीनार सनातनियों को सौंपकर वहां भव्य विष्णु मंदिर बनाया जाए। पातालपुरी मठ के पीठाधीश्वर बालक देवाचार्य महाराज ने कहा कि मुस्लिम शासन में मंदिर तोड़कर संरचनाएं बनाई गईं, लेकिन आज भी हिंदू देवताओं के चिन्ह उपस्थित हैं।

इस दिन साहित्यिक मंच पर भारतीय सिनेमा, इतिहास और कला से जुड़े मिथकों पर गहन विमर्श हुआ। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में लोकनृत्य और लोकगीतों ने भारतीय संस्कृति की विराटता को जीवंत किया। साधो बैंड और हंसराज रघुवंशी जैसी प्रस्तुतियों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। युवाओं के लिए ओपन माइक ने स्वरचित कविताओं और गीतों का मंच प्रदान किया, जो भक्ति और देशप्रेम से ओत-प्रोत थे।

4 जनवरी को उत्सव का समापन उत्तराखंड के मुख्य मंत्री पुष्कर सिंह धामी की उपस्थिति में हुआ। मुख्य सत्र 'संघे शक्ति कलियुगे' में सुनील आम्बेकर ने फिर भाग लिया और कहा कि डॉ. हेडगेवार ने संघ की स्थापना सामाजिक सुधार के लिए की। हिंदुत्व को भारत को एकता के सूत्र में बांधने वाला बताया और पंच परिवर्तन को सामाजिक समरसता का माध्यम।

'ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड' सत्र में विष्णु शंकर जैन, विक्रमजीत बनर्जी, अमन लेखी और सिद्धार्थ लूथरा जैसे कानूनी विशेषज्ञों ने भारतीय न्याय प्रणाली के भारतीयकरण पर चर्चा की। जैन ने मथुरा जन्मभूमि और ज्ञानवापी जैसे मामलों पर भी चर्चा की, जबकि बनर्जी ने समान नागरिक संहिता की वकालत की। 'Gen Z: विकसित भारत के सारथी' सत्र में चंद्रप्रकाश द्विवेदी, अभिलिप्सा पांडा, विशाल चौरसिया और भाषा सम्भाली ने युवाओं को भक्ति, लक्ष्य और सत्य की राह दिखाई। द्विवेदी ने प्राचीन युवा नायकों जैसे प्रह्लाद और ध्रुव का उदाहरण दिया।

अंतिम सत्र 'धर्मरक्षक धामी' में मुख्य मंत्री धामी ने उत्तराखंड में लैंड जिहाद के विरुद्ध कार्रवाई, अवैध ढांचों की ध्वस्तीकरण और समान नागरिक संहिता लागू करने की बात की। उन्होंने कहा कि देवभूमि की सांस्कृतिक चेतना को बनाए रखना उनकी सरकार का संकल्प है।

एक नई दिशा और प्रेरणा

शब्दोत्सव 2026 केवल एक आयोजन नहीं बल्कि एक दिशा और विश्वास की नई शुरुआत सिद्ध हुआ। यहां कोई विभाजनकारी विचारधारा नहीं थी, कोई विवादास्पद एजेंडा नहीं - केवल राष्ट्रप्रेम, भक्ति और एकता के स्वर गूंजे। बच्चे और युवा भक्ति गीतों पर झूमे, वक्ताओं ने भारतीयता के उत्थान पर जोर दिया। यदि यह उत्सव अपनी गति बनाए रखता है तो भविष्य में यह जश्ने रेख्ता या जयपुर लिट फेस्ट जैसे आयोजनों के अतिरिक्त मजबूत विकल्प बनेगा। लोग नए साहित्य उत्सवों की तुलना शब्दोत्सव से करेंगे क्योंकि इसने दिखाया कि संस्कृति का उत्सव बिना किसी वैचारिक विभाजन के, सकारात्मकता से मनाया जा सकता है। यह भारतीय सभ्यता का सच्चा संवाहक बना और आने वाले वर्षों में अन्य आयोजनों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा। 'भारत अभ्युदय' थीम के साथ शुरू हुए इस महोत्सव में 100 से अधिक वक्ताओं ने भाग लिया, 40 से ज्यादा पुस्तकों का विमोचन हुआ और हजारों दर्शकों ने साहित्य, संगीत तथा वैचारिक विमर्श का आनंद लिया। यह उत्सव सिद्ध करता है कि साहित्यिक मंचों पर सकारात्मक, एकता और आध्यात्मिक मूल्यों को केंद्र में रखकर भी व्यापक स्वीकार्यता प्राप्त की जा सकती है।

●●●

नए वर्ष के आरम्भ में जहां लोग उत्साह-उल्लास व जश्न में डूबे हुए थे, वहीं जेन-जी, जेन-अल्फा ने डिस्को और पब में जाने की बजाए भजन-क्लबिंग में दिलचस्पी ली। मंदिरों में इनकी अच्छी खासी भीड़ देखी गई ये सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व धार्मिक पुनर्जागरण नहीं तो और क्या है।

शिवा पंचकरण

देवस्थान बने युवाओं की पहली पसंद

आंग्ल नववर्ष 2026 के पहले दिन काशी विश्वनाथ मंदिर नें 3 किलोमीटर लम्बी श्रद्धालुओं की लाईन लगी हुई थी। वैष्णो देवी, जगन्नाथ, तिरुपति, कामाख्या मंदिरों में भी नववर्ष में ऐसी ही भीड़ जुटी हुई है। अयोध्या में दिसम्बर मास में 5 करोड़ श्रद्धालुओं ने दर्शन किया। आश्चर्य इस बात का है कि जेन-जी, जेन-अल्फा ने आंग्ल नववर्ष किसी क्लब या पार्टी में मनाने की बजाए मंदिरों में भगवान के दर्शन किए। डिस्को और पब की जगह युवा भजन-क्लबिंग में दिलचस्पी लिया। नशे और शराब से सम्बंधित गानों की जगह रामायण की चौपाई और संस्कृत श्लोकों ने ले ली है। यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ है बल्कि कोलोनियल मानसिकता का राहू जिस भारतीय संस्कृति के सूर्य को ग्रहण लगाने का प्रयास कर रहा था वह सूर्य पुनः अपनी संस्कृति से विश्व को रोशन करने के लिए उठ खड़ा हुआ है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में एक समय आया जब भारतीय युवा नास्तिकता, पश्चिम सभ्यता का अनुकरण कर रहे थे। वामपंथी कुचक्र में एक पूरी भारतीय पीढ़ी हीनता के भाव से ग्रसित हो गई, जिनकी दृष्टि में जो भी अच्छा था वह भारत के बाहर था और जो भी खराब था वह केवल भारत के अंदर था। यह समझना आवश्यक है कि यह भाव सच में भारतीयों के मन में था या सिनेमा और साहित्य के माध्यम से यह भाव दिखाया जा रहा था। जो भी कारण हो एक लम्बे समय तक भारतीय मानस इस हीनता के भाव के तले दबा रहा। किंतु अभी हाल ही में भारतीय युवा इस मानसिक गुलामी के बंधनों को तोड़ता हुआ पुनः अपने गौरवमयी इतिहास और संस्कृति के प्रति अग्रसर हुआ है। युवाओं ने पुनः अपनी संस्कृति की जड़ों को मजबूत करने के लिए स्वयं को भारतीय दृष्टि, आचार और व्यवहार में ढालना शुरु कर दिया है। सोशल मीडिया से शुरु हुई यह क्रांति अभी जनक्रांति का रूप ले चुकी है। आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री चंद्रबाबू नायडू के अनुसार, मंदिरों से प्रभावित आर्थिक गतिविधियां 6 लाख करोड़ की हैं, जो वर्ष भर चलती हैं। एक मंदिर न केवल आसपास के लोगों को

रोजगार देता है बल्कि वहां की परम्परिक कलाओं, साहित्य, परम्परिक हस्तशिल्प को भी जीवंत करता है। प्राचीन काल में भी मंदिर इसी प्रकार बहुत सारी गतिविधियों के केंद्र बनते थे और उस समय जब टूरिज्म शब्द भी प्रचलन में नहीं था तो भी भक्ति के साथ-साथ पर्यटन के भी केंद्र बनते थे। जहां व्यापार, विभिन्न कलाओं का समागम और ज्ञान का प्रसार होता था। वर्तमान भारतीयों ने भारत की इस सॉफ्ट पावर को समझना शुरु किया है और पुनः इसी प्रकार का वातावरण तैयार किया है। इसलिए कुछ वर्षो में केदारनाथ, बद्रीनाथ, हरिद्वार, वृंदावन, मथुरा, अयोध्या, काशी, हम्पी, श्रीबालाजी, मदुराई, और कामाख्या मंदिर जैसे स्थानों पर पर्यटकों की संख्या बढ़ी है और इसमें बड़ी संख्या युवाओं की है। उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग के अनुसार, इस वर्ष वाराणसी के घाटों पर युवाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। आंग्ल नववर्ष में नशे और अन्य व्यसन को छोड़ कर भारतीय युवाओं ने अपनी दिशा बदल कर काशी के घाटों में अध्यात्म की ओर किया है जो अपने आप में भारत के लिए सकारात्मक संदेश है। कुछ समय से यह पैटर्न केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं अपितु भारत के अन्य धार्मिक स्थलों में भी देखने को मिल रहा है। इसके साथ ही भारत के परम्परिक और स्थानीय संस्कृतिक-धार्मिक उत्सवों की झलक पाने के लिए भी युवा उत्साहित हैं। हाल ही में हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले का 'राउलानी मेला' खूब चर्चा में आया। कंतारा जैसी फिल्में भारतीय युवाओं में खूब प्रचलित हो रही हैं, जो न केवल भारत की संस्कृतिक वैभवता को दिखाती है बल्कि भारत की भू-संस्कृतिक एकता का भी परिचायक है। अपनी संस्कृति पर गर्व करने का मुख्य कारण युवाओं को अपने इतिहास और संस्कृति से पुनः परिचय होने लगता है, जिसमें सोशल मीडिया ने एक बड़ी भूमिका निभाई है। भारतीय लोग एक लम्बे संघर्ष के कारण अपनी संस्कृति की वैभवता और जानकारी से कट से गए थे किंतु सोशल मीडिया ने एक आवाज प्रत्येक भारतीय को दी है जिस कारण अपनी ही संस्कृति के बारे मे उन्हें तुरंत जानकारी मिल जाती है। इसलिए एक फोटो वायरल होने से प्रत्येक युवा के मन में अपनी जड़ों और संस्कृति के बारे में जानने की उत्सुकता बढ़ती है, जिसे पुनः लुप्त होने की कगार पर खड़ी परम्परा और त्यौहारों को एक नया जीवन मिल जाता है। यह नया जीवन केवल परम्परा को नहीं बल्कि उसके इर्द-गिर्द के सारे समाज को मिलता है। कॉलोनियल शक्तियों ने धार्मिक बंदोबस्ती और सम्पत्ति जब्ती विनियमन 1817 के माध्यम से मंदिरों पर नियंत्रण स्थापित किया जो आज तक जारी है। जिससे मंदिर कानूनी रूप से केवल धन लूटने का साधन मात्र रह गए। यह परम्परा आज भी जारी है जिस कारण मंदिरों का धन सरकारें अपने लाभ के लिए प्रयोग करती है। हिमाचल में हाईकोर्ट ने जब मंदिरों के धन पर सरकार के नियंत्रण के लिए रोक लगाई उसके खिलाफ कांग्रेस सरकार पुनः हाईकोर्ट में पुनर्विचार याचिका दायर कर रही है। यहां पर प्रश्न यह है कि श्रद्धालु ने दान मंदिर में किया है या सरकार को? सरकार को दान चाहिए तो वह अपना खाता बना सकते हैं किंतु श्रद्धालुओं द्वारा दिया गया दान मंदिर के लिए है और मंदिर के द्वारा ही उसका प्रयोग होना चाहिए। मद्रास हाईकोर्ट ने भी हाल ही में तमिलनाडू सरकार को फटकार लगाते हुए कहा है कि मंदिर का धन उस मंदिर के देवता का है। इस धन से मंदिर न केवल प्रतिदिन हजारों लोगों को भोजन करवाते हैं बल्कि अस्पताल, अनाथालय, वृद्धाश्रम जैसे कई सामाजिक प्रकल्प भी चलाते हैं। सरकारों के अंतर्गत आने के बाद मंदिर के प्रांगण का स्वयं अपना विकास भी बाधित हो जाता है। अयोध्या का राम

मंदिर और काशी विश्वनाथ जैसे मंदिर अत्याधुनिक तकनीक और लोगों की आवाजाही के लिए स्थिति अनुकूल बनाए गए हैं इस कारण श्रद्धालुओं की संख्या में न केवल बढ़ोत्तरी हुई है बल्कि दर्शन सहजता से हो पाने के कारण संस्कृतिक पर्यटन भी बढ़ा है। आज भारतीय मंदिरों का यह नेटवर्क न केवल भारत को संस्कृतिक रूप से एक करता है बल्कि भारत की जीडीपी में लगभग 3 प्रतिशत का योगदान देता है, जो न केवल रोजगार बल्कि स्थानीय विकास को भी बढ़ावा देता यह और सकारात्मक बात यह है की इसमें भारतीय युवा बढ़ चढ़ कर योगदान कर रहे हैं।

डॉ. सुशील कोटनाला

एक सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है कि रील्स, मीम्स और वॉइस चैट बनाने तथा फॉरवर्ड करने वाला विश्व का सबसे बड़ा देश भारत है। अब प्रश्न यह उठता है कि इस सर्वेक्षण पर हमें गर्व से अपना सीना फुलाना चाहिए या फिर हमें इस पर चिंता व अवलोकन की आवश्यकता है।

सर्वेक्षण पर हो अवलोकन

एक सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है कि रील्स, मीम्स और वॉइस चैट बनाने तथा फॉरवर्ड करने वाला विश्व का सबसे बड़ा देश भारत है। इस सर्वेक्षण से आत्ममुग्ध होकर हम इसे भारत का सौभाग्य समझ रहे हैं, जबकि यह भारत की तरुणाई और यौवन पर दीमक की तरह लगकर भारत की सृजनशीलता, मौलिक वैचारिकता और शोध-वृत्ति को नष्ट करने का संकेत है।

डिजिटल क्रांति ने सम्पूर्ण विश्व सहित भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा वैचारिक परिदृश्य को भी परिवर्तित कर दिया है। आज भारत रील्स, मीम्स, वॉइस चैट और सामाजिक प्रचार माध्यम की सामग्री बनाने व फॉरवर्ड करने के क्षेत्र में संसार का सबसे बड़ा देश बन चुका है। स्मार्ट फोन, सर्व सुलभ इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की व्यापक पहुंच ने प्रत्येक आयुवर्ग के व्यक्ति को डिजिटल-संसार से युक्त कर दिया है, जिससे मुक्त होना सहज-सरल नहीं है। अनेक युवाओं ने सोशल मीडिया को रोजगार का माध्यम भी बनाया है। डिजिटल क्रिएशन, इंफ्लुएंसर मार्केटिंग, ब्रांड प्रमोशन आदि इसके उदाहरण हैं, किंतु इस उपलब्धि को केवल संख्या और समय के आधार पर आंका जाए तो यह उसकी उत्पादकता पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है क्योंकि हम अपनी ऊर्जा समय और बुद्धि का बड़ा भाग केवल मनोरंजन और फॉरवर्ड कल्चर में लगा रहे हैं। हम अपना अधिकांश समय सोशल मीडिया पर नष्ट कर रहे हैं।

सर्वेक्षण के आंकड़े और हमारा सामाजिक व्यवहार स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि भारत में बड़ी संख्या में लोग विशेषकर युवा, किशोर तथा बाल अपना अधिकांश समय सोशल मीडिया पर व्यतीत करते हैं। एक मनोरोगी की भांति प्रत्येक भारतीय सुबह उठते ही मोबाइल चेक करता है, खाली समय में रील्स स्क्रॉल करता है, रात को नींद घटाकर देर रात तक स्क्रीन से चिपका रहता है। अपनी पढ़ाई, परिवार, व्यायाम/योग और आत्मचिंतन के लिए हमारे पास समय नहीं है। वर्चुअल

संसार हमारे यथार्थ जीवन का अतिक्रमण कर रहा है। संवाद घटता जा रहा है, प्रदर्शन बढ़ता जा रहा है। सामाजिक प्रचार माध्यम का सीमित और लक्षित उपयोग निसंदेह उचित है, यह जानकारी, जागृति सामाजिक विषयों के लिए मंच और मार्ग प्रदान करता है। जब उपयोग सदूर मित्रों से संवाद बनाता है, परंतु जब उपयोग जीवन को निरर्थक बनाने लगे तब यह अनुचित है, जब सोशल मीडिया समय प्रबंधन को बिगाड़ दे, मानसिक शांति छीन ले, तुलना और प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ा दे, यद्यपि भारत डिजिटल कंटेंट में अग्रणी है, किंतु केवल कंटेंट उपभोग और फॉरवर्ड से राष्ट्र का सर्वांगीण विकास नहीं होता। सौभाग्य तब होगा जब हम ज्ञानवर्धक, रचनात्मक और सकारात्मक विषय-सामग्री में अग्रणी बनें। शिक्षा, विज्ञान, नवाचार,स्वास्थ्य और सामाजिक सुधार से जुड़े, डिजिटल प्रयासों द्वारा भारत प्रगति करेगा। हमारी पहचान केवल रील्स और मीम्स तक सिमट जाए तो यह आत्ममंथन का विषय है। मानसिक अस्वस्थता, तनाव, अवसाद, अकेलापन और आत्मविश्वास का ह्रास तथा हीन भावना इत्यादि सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग की उपज हैं। सामाजिक सम्बंधों में दूरी, पारिवारिक विघटन तथा चारित्रिक पतन से देश की अवनति हो रही है। गलत सूचनाएं और अफवाहें देश में भय और भ्रम का वातावरण बना रही हैं।। नेत्र ज्योति क्षीण होने तथा गर्दन और कमर दर्द से भारतीय नागरिक कराह रहे हैं। वस्तुतः हम रील्स मीम्स और वॉइस चैट में अग्रणी होकर इसे अपनी उपलब्धि मानने की भूल कर रहे हैं। वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि हम सोशल मीडिया को साधन बनाएं साध्य नहीं।

समय संतुलन, उद्देश्य की स्पष्टता और सकारात्मक कंटेंट की ओर उन्मुख होकर इसे उचित दिशा दी जा सकती है। हम अपने विवेकपूर्ण उपयोग से सोशल मीडिया को भारत के सौभाग्य का उपकरण बना सकते हैं। हमें ध्यान रखना होगा कि हम स्वयं सोशल मीडिया के लिए उपकरण बनकर दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति न उत्पन्न करें। आज कृत्रिम बौद्धिकता के युग में इंटरनेट का प्रयोग यदि विवेक से नहीं कर पाए तो निश्चित रूप से यह मानवता के लिए दुर्भाग्यपूण होगा।

भारत धर्म, संस्कृति तथा अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है और हमारे सनातन जीवन मूल्य मानवता की अद्वितीय धरोहर हैं, इनके संरक्षण और संवर्धन के लिए मौलिक तथा नवीन विषय सामग्री को युग-युग से संचित भारतीय-ज्ञान परम्परा के अनुकूल बनाकर भारत सहित सम्पूर्ण विश्व का हित होगा। सतही और ऊपरी ज्ञान के स्थान पर स्वाध्याय, आत्मचिंतन, अनुसंधान के मौलिक प्रयास हमें परिपूर्णता प्रदान करते हैं। प्रकृति के निकट रहना, परिवार को समय देना, जैविक कृषि पशुपालन आदि ऐसे कार्य हैं, जो डिजिटल संसार से नहीं यथार्थ के कठोर धरातल पर मनुष्य को प्रसन्नता, आनंद और जीवन के प्रति उत्साह प्रदान करते हैं। डिजिटल संसार हमारे आनंद का साधन बने साध्य नहीं, प्रकृति से निकटता ही हमें जिजीविषा दे सकती है। अत्याधिक इंटरनेट का उपयोग कदापि नहीं।

Finest Saffron In The World
PURE & NATURAL
5g
50mg
1g
Pack Size Available
0.25g
0.5g
Haldiram's
Benefits Of Saffron
• Boosts Brain Health
• Improves Digestion
• Improves Vision
• Prevents Hair Loss
Haldiram's
Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT
TM
केसर तिलक
★दिव्यता ★समृद्धि ★शुभ भाग्य
★संपत्ति ★कैरियर के अच्छे अवसर
अपने भीतर बुद्धि, दूरदर्शिता समृद्धि और भक्ति बढाने के लिए केसर तिलक लगाऐ।
तिलक लगाने का अर्थ है चक्रों और ऊर्जा बिंदुओं को सक्रिय करना जिससे आपके भीतर अधिक सामंजस्य और खुशी का विकास होता है। केसर तिलक **आज्ञा चक्र** पर लगाया जाता है, जो माथे का मध्य भाग है, यह चक्र दिव्यता, अंतर्ज्ञान और बुद्धि से संबंधित है। मनुष्य के सभी कार्य इसी विशिष्ट बिंदु द्वारा नियंत्रित होते हैं, और संतुलित होने पर यह भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढाता है। **विशुद्धि चक्र** का संबंध संचार और अभिव्यक्ति से है। नाभि मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है और यह मानव जीवन का केंद्र है जो **मणिपुर चक्र** से संबंधित है।*
ज्योतिषीय दृष्टि से केसर का तिलक बृहस्पति (बुद्धि, धन, आध्यात्मिकता), बुध (वित्त, बुद्धि, संचार, भावनात्मक ऊर्जा), केतु (अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आंतरिक शांति की भावना) और मंगल का समर्थन) की ऊर्जा को संतुलित करता है।*
केसर तिलक कैसे तैयार करें
कुछ पिसे हुए केसर के रेशे (धागे) या केसर पाउडर लें, उसमें पवित्र जल या गंगाजल की कुछ बूँदें डालकर पेस्ट बना लें। आपका केसर का तिलक तैयार है। अपने जीवन को बेहतर बनाने और ऊर्जा बिंदुओं को संतुलित करने के लिए **अनामिका उंगली** से माथे, कानों, गले और नाभि पर लगाएँ। चाँदी की डिब्बी में इसे तैयार करना व रखना अधिक शुभ माना जाता है।
*Data on file
GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

रील्स में आनंद की अभिलाषा

आप जब रील्स देखने में मग्न रहते हैं तो कभी-कभी आप अनायास ही हंस पड़ते हैं। कभी तो आस-पास के लोगों से बेखबर होकर भी आप ठठाह के हंस पड़ते हैं। कई ऐसी रील्स हैं जो बहुत अधिक पसंद की जाती हैं जो लोगों को तनाव भरे जीवन में आनंद देती हैं।

मनोरंजन

अतुल गंगवार

किरिष का गाना सुनेगा क्या? ये प्रश्न पूछता एक मासूम सा चेहरा और उसके पीछे 'हां' कहती हुई हंसती हुई आवाजें, आजकल सोशल मीडिया की सनसनी बनी हुई हैं। चाहें आप ट्रेन में हों या फिर हवाई जहाज में। सार्वजनिक बस में हों या फिर मेट्रो रेल में, कहीं ना कहीं से ये आवाज आपके कानों में पड़ ही जाएगी, किरिष का गाना सुनेगा क्या? चारों ओर वर्तमान समय में इसी गाने और गायक की चर्चा है। क्या आम, क्या खास। ऐसा लग रहा है कि यदि किरिष का गाना नहीं सुना, तो कुछ नहीं सुना।

जमशेदपुर के रहने वाले पिंटू एक रील में इस गाने को गाते दिखाई-सुनाई देते हैं। साधारण सा व्यक्तित्व- गाने में भी कुछ ऐसा नहीं कि लगे कोई चमत्कार हो गया हो, लेकिन लोकप्रियता की स्थिति ये कि अच्छे-अच्छे फेल हो जाए। यही सोशल मीडिया की ताकत है और किरिष का गाना सुनाते पिंटू सोशल मीडिया की नई सनसनी। पर कब तक?

अभी बहुत समय नहीं हुआ है जब रानू मंडल (याद आया- कुछ लोग लता मंगेशकर से तुलना कर रहे थे) तेरी मेरी कहानी गीत की गायिका जिन्हें संगीतकार हिमेश रेशमिया ने बहुत धूमधाम से लॉन्च किया था। फिर 'कच्चा बादाम' वाले भुबन बादायकर भी आपको याद ही होंगे? क्या धूम मची थी भाई की। इसी तरह 'बचपन का प्यार मेरा भूल नहीं जाना' वाले गायक सहदेव दिरदो जो रातों रात सोशल मीडिया की सनसनी बन गए थे। प्रसिद्ध रेपर बादशाह भी सहदेव के साथ गाना रिकॉर्ड करते दिखाई दिए थे। फिर आया कुम्भ, जो मोनालिसा के जीवन में सफलता की रोशनी लाया, हालांकि अभी पता नहीं कि मोनालिसा की सफलता स्थाई होगी या फिर वो भी जुगनू की तरह चमक कर रह जाएगी। ये सभी उन चंद लोगों में से एक हैं जिन्हें सोशल मीडिया ने लाखों लोगों का चहेता बना दिया था, लेकिन उनकी सफलता लम्बे समय तक नहीं बनी रही। आखिर क्या कारण है कि समय-समय पर इस तरह के कुछ नाम आपके और हमारे बीच से पैदा होते हैं, कुछ समय तो सुर्खियां बटोरते हैं, फिर कहीं खो जाते हैं।

किरिष का गाना सुनेगा क्या... ले बेटा, से चर्चित पिंटू जमशेदपुर के रहने वाला बताए जाते हैं। मामूली कचरा बीनने वाले से आज देश भर में छाए पिंटू की अपनी कहानी में बहुत दर्द है। ये भी संयोग ही है कि जिस समय पिंटू का गाया गाना चर्चा में है, ठीक उसी समय टी सीरीज ने भोजपुरी में यही गाना लॉन्च किया है जिसकी हुक लाइन यही है... किरिष का गाना सुनेगा क्या... ले बेटा, किरिष का गाना सुनेगा क्या?

इस बात से नकारा नहीं जा सकता कि आज सोशल मीडिया की ताकत बहुत बड़ी है। इसके चलते हमें कई चमत्कार देखने को मिले हैं, लेकिन ये भी देखने में आया है इस तरह के चमत्कार अधिकतर फुस्स हो जाते हैं। अब जिस पिंटू को वंडर बॉय बताया जा रहा है। जिस तरह

से सोशल मीडिया पर वो छाया हुआ है और उसने जो गाना गाया है उसको देखते-सुनते ऐसा नहीं लगता कि वो लम्बी रेस दौड़ने वाला है। आखिर क्या कारण है कि सोशल मीडिया पर इस तरह के सितारे चमकते हैं और जल्दी ही आंखों से ओझल हो जाते हैं।

सच तो ये है कि आजकल जीवन की आपाधापी में लोगों के पास समय ही नहीं है कि वो कहीं टिक कर अपनी समस्याओं के बारे में सोच सकें। उसके हाथ में मोबाइल फोन लगातार उसकी उंगलियों को किसी ऐसे कंटेंट की खोज में लगाए रखता है जो उसको उसके वर्तमान से निकाल कर कुछ मनोरंजन दे जाए। इसीलिए आप लोकल में, मेट्रो में, बस में, रिक्शे में, सड़क पर हर जगह कानों में हेडफोन लगाए, सभी आयु के लोगों को देखते होंगे। कभी आप उनके चेहरों को देखिए। किसी के चेहरे पर मुस्कराहट है, कोई अपने आसपास से बेखबर हंस रहा है। कोई किसी से बात कर रहा है। सब अपनी मंजिल पर पहुंचने के बीच के समय का कुछ ना कुछ उपयोग कर रहे हैं। यदि आप उनकी स्क्रीन पर दृष्टि डाल पाएं तो आपको अचरज होगा कि अधिकांश लोग छोटी-छोटी रील्स का आनंद ले रहे हैं। इन रील्स में कोई बड़े सितारे नहीं हैं। ऐसे आम लोग हैं जो उनकी तरह ही दिखते हैं। उनकी अपनी सी गतिविधियां उन्हें आनंद देती हैं।

रानू मंडल, भुबन बादायकर, सहदेव, दस वाला बिस्कुट का पैकेट कितने का है, वाले शादाब जकाती के साथ अनेक युट्यूबर अपनी रील्स के माध्यम से लोगों के चेहरे पर हंसी ला रहे हैं। इनकी लोकप्रियता की स्थिति ये है कि बड़ी-बड़ी सैलिब्रिटी भी इनके साथ रील्स बना रही हैं।

सोशल मीडिया पर जो लोग इस तरह की सनसनी को गढ़ते हैं, उनके पास एक जगह टिकने का समय नहीं है। वो लोग तेजी से नई खोज में लग जाते हैं। उन्हें नित नए मनोरंजन के रास्ते देखने पड़ते हैं, ढूंढ़ने पड़ते हैं। नित नए किरदार गढ़े जाते हैं। कदाचित् यही कारण है कि इस तरह की सनसनियों का आगमन लगातार होता रहता है। जिसमें दम होता है वो टिक जाता है।

अब देखना ये है कि कब तक लोग, 'किरिष का गाना सुनेंगे... आप सुनेंगे?' एक बार तो सुनना बनता है। गाने के साथ पिंटू प्रसाद का गाना सुनाने का अंदाज भी निराला है। सोशल मीडिया ने बहुत लोगों को आनंद दिया है और बहुत लोगों को आगे बढ़ने का रास्ता। यही जुगलबंदी चलती रहे। नित नए सितारे आते रहें और हमारे चेहरे पर हंसी लाते रहें। ●●●

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 20,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

बांग्लादेशी क्रिकेटर मुस्तफिजुर रहमान को बाहर का रास्ता दिखाना इस बात को प्रमाणित करता है कि किसी भी संस्था या व्यक्ति के लिए देश सबसे पहले है। देश की आन-बान व शान के लिए प्रत्येक भारतीयों का यह कर्तव्य है कि वो सबसे पहले देश हित का ध्यान रखें।

मैदान पर देश सबसे बड़ा

खेल से राजनीति के गहरे सम्बंधों का एक इतिहास रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर कई बार ऐसे प्रकरण हुए हैं जिनका सम्बंध दो देशों के राजनीतिक सम्बंधों पर पड़ा है। भले ही वो प्रकरण खेलों के बहिष्कार से या खिलाड़ियों के निष्कासन से जुड़ जाता है। पहलगाम घटना के बाद हमने पहला काम तो यह किया कि इस घटना का जिम्मेदार माने जाने वाले देश पाकिस्तान से हम खेलों के मैदान में अवश्य मिल रहे हैं, लेकिन हाथ मिलाने से साफ-साफ मुंह फेर ले रहे हैं। यह बात पूरी दुनिया देख रही है। क्रिकेट के मैदान में तो सबने देख लिया कि हम पहलगाम की घटना से कितने आहत हुए हैं? इन दिनों जब बांग्लादेश में हिंदुओं पर बर्बरतापूर्ण हमले हो रहे हैं। पूरा देश इस घटना से विचलित है। जहां हम अपने विरोध की भावनाएं प्रकट कर सकते हैं, हमें अवश्य करना चाहिए।

क्रिकेट उत्सव के रूप में परम्परागत रूप से आईपीएल का आयोजन हो रहा है। अभिनेता शाहरूख खान की क्रिकेट टीम 'कोलकाता नाईट राईडर्स' ने बांग्लादेश के खिलाड़ी मुस्तफिजुर रहमान को अपनी टीम के लिए खरीदा। अब भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के निर्देश पर उसे तत्काल टीम से निकाल दिया गया है। इस लीग के सारे मैच देश के अलग-अलग मैदानों में खेले जाएंगे। इन मैचों को देखनेवाले सारे दर्शक देशी होंगे। उन्हें यह कतई सहन नहीं होगा कि पड़ोसी देश का एक ऐसा खिलाड़ी हमारे देश की जमीन पर खेल रहा हो, जिसके देश में हमारे एक विशेष समुदाय के लोगों पर लगातार हमले हो रहे हैं। मंदिर जला दिए जा रहे हैं, घरों में आग लगा दी जा रही है। उसी देश का कोई खिलाड़ी हमारे देश में शान से क्रिकेट खेल रहा है। बीसीसीआई के निर्देश पर ही सही खिलाड़ी को बाहर का रास्ता दिखाने का साहसिक निर्णय लिया जाना वाकई प्रशंसनीय है। सबसे पहली बात कि नीलामी की प्रक्रिया में मुस्तफिजुर रहमान के नाम पर विचार ही नहीं किया जाना चाहिए था।

राजीव रोहित

हालांकि वो पिछले पांच सीजन अलग-अलग टीमों से खेल चुके थे। नीलामी में बोली लगाने का यह भी एक कारण रहा होगा। इससे पूर्व आईपीएल में पाकिस्तानी खिलाड़ी भी खेलते थे, लेकिन आतंकवादियों के कारनामों के कारण उनके खिलाड़ियों को बाहर का रास्ता दिखाया गया। यह बीसीसीआई के दृढ़ निश्चय का ही परिणाम है कि आज पाकिस्तान का कोई भी खिलाड़ी आईपीएल में नहीं खेल रहा है। यह बात तो स्थापित हो चुकी है कि पाकिस्तान कभी नहीं सुधरनेवाला है, इसलिए उसके खिलाड़ियों का भारत में प्रवेश निषेध हो चुका है। भारत के विरुद्ध विष उगलने से भी वहां के लोग बाज नहीं आ रहे हैं। ऐसे में बांग्लादेश से हमारे राजनीतिक सम्बंध चाहे जैसे भी रहें, लेकिन जहां हम ठोस संकेतात्मक विरोध कर सकते हैं वहां हमें पीछे नहीं हटना चाहिए। ●●●

ओजस्वी व प्रखर समाज सुधारक
स्वामी विवेकानंद

विवेकानंद का बचपन का नाम नरेंद्र था। उनका जन्म कोलकाता में 12 जनवरी, 1863 को हुआ था। बचपन से ही वे बहुत शरारती, साहसी और प्रतिभावान थे। पूजा-पाठ और ध्यान में उनका मन बहुत लगता था। नरेंद्र के पिता उन्हें अपनी तरह प्रसिद्ध वकील बनाना चाहते थे पर वे धर्म सम्बंधी अपनी जिज्ञासाओं के लिए इधर-उधर भटकते रहते थे। किसी ने उन्हें दक्षिणेश्वर के पुजारी श्री रामकृष्ण परमहंस के बारे में बताया कि उन पर मां भगवती की विशेष कृपा है। यह सुनकर नरेंद्र उनके पास जा पहुंचे। वहां पहुंचते ही उन्हें लगा, जैसे उनके मन-मस्तिष्क में विद्युत का संचार हो गया है। यही स्थिति रामकृष्ण जी की भी थी। उनके आग्रह पर नरेंद्र ने कुछ भजन सुनाएं। भजन सुनते ही परमहंस जी को समाधि लग गई। वे रोते हुए बोले, नरेंद्रमैं कितने दिनों से तुम्हारी प्रतीक्षा में था। तुमने आने में इतनी देर क्यों लगाई? धीरे-धीरे दोनों में प्रेम बढ़ता गया। वहां नरेंद्र की सभी जिज्ञासाओं का समाधान हुआ।

उन्होंने परमहंस जी से पूछा - क्या आपने भगवान को देखा है? उन्होंने उत्तर दिया - हां, केवल देखा ही नहीं उससे बात भी की है। तुम चाहो तो तुम्हारी बात भी करा सकता हूं। यह कहकर उन्होंने नरेंद्र को स्पर्श किया। इतने से ही नरेंद्र को भाव समाधि लग गई।अपनी सुध-बुध खोकर वे मानो दूसरे लोक में पहुंच गए। अब नरेंद्र का अधिकांश समय दक्षिणेश्वर में बीतने लगा। आगे चलकर उन्होंने संन्यास ले लिया और उनका नाम विवेकानंद हो गया। जब रामकृष्ण जी को लगा कि उनका अंत समय पास आ गया है, तो उन्होंने विवेकानंद को स्पर्श कर अपनी सारी आध्यात्मिक शक्तियां उन्हें दे दीं। अब विवेकानंद ने देश-भ्रमण प्रारम्भ किया और वेदांत के बारे में लोगों को जाग्रत करने लगे।

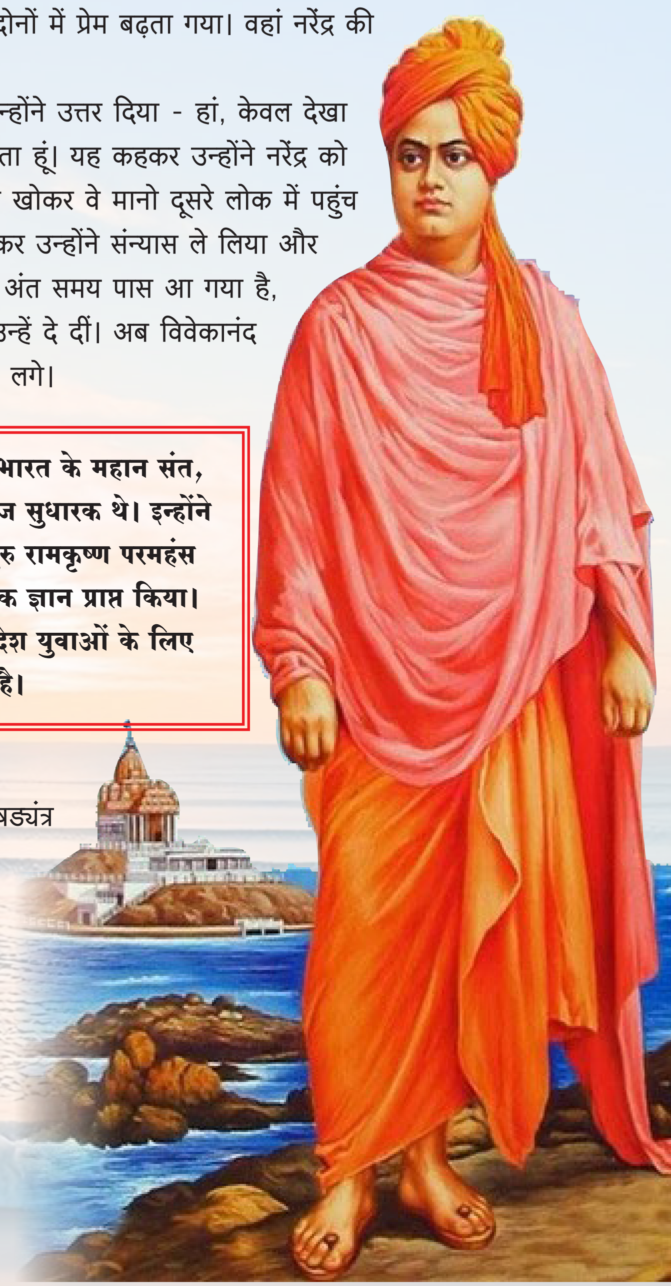

उन्होंने देखा कि ईसाई पादरी निर्धन ग्रामीणों के मन में हिंदू धर्म के बारे में तरह-तरह की भ्रातियां फैलाते हैं। उन्होंने अनेक स्थानों पर इन धूर्त मिशनरियों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी पर कोई सामने नहीं आया। इन्हीं दिनों उन्हें शिकागो में होने जा रहे विश्व धर्म सम्मेलन का पता लगा। उनके कुछ शुभचिंतकों ने धन का प्रबंध कर दिया। स्वामी जी भी ईसाइयों के गढ़ में ही उन्हें ललकारना चाहते थे। अतः वे शिकागो जा पहुंचे।

स्वामी विवेकानंद भारत के महान संत, विचारक और समाज सुधारक थे। इन्होंने अपने जीवन में गुरु रामकृष्ण परमहंस से गहन आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। आज भी इनके संदेश युवाओं के लिए प्रेरणादायक है।

शिकागो का सम्मेलन वस्तुतः दुनिया में ईसाइयत की जयकार का षड्यंत्र मात्र था। इसलिए विवेकानंद को बोलने के लिए सबसे अंत में कुछ मिनट का ही समय मिला पर उन्होंने अपने पहले ही वाक्य 'अमरीकावासियों भाइयों और बहिनों' कहकर सबका दिल जीत लिया। तालियों की गड़गड़ाहट से सभागार गूंज उठा। यह 11 सितम्बर, 1893 का दिन था। उनका भाषण सुनकर लोगों के भ्रम दूर हुए। इसके बाद वे अनेक देशों के प्रवास पर गए। इस प्रकार उन्होंने सर्वत्र हिंदू धर्म की विजय पताका लहरा दी।

भारत लौटकर उन्होंने श्री रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी विश्व भर में वेदांत के प्रचार में लगा है। जब उन्हें लगा कि उनके जीवन का लक्ष्य पूरा हो गया है, तो उन्होंने 4 जुलाई, 1902 को महासमाधि लेकर स्वयं को परमात्म में लीन कर लिया। •••

ए.पी.एम.सी. अनाज बाजार में राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड अध्यक्ष की भेंट

नवी मुंबई । स्वदेशी भारत-आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड, भारत सरकार के अध्यक्ष सुनील सिंघी ने 02 जनवरी 2026 को नवी मुंबई स्थित ए. पी. एम. सी. मार्केट के अनाज बाजार का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने सेक्टर-19, वाशी में आयोजित बैठक को संबोधित किया।

बैठक में व्यापारियों की वर्तमान स्थिति, Vocal for Local, जी. एस. टी. सुधार, FSSAI, MSME नियमों में बदलाव एवं व्यापार में सरलता जैसे विषयों पर चर्चा हुई। सुनील सिंघी ने स्वदेशी उत्पादों के उपयोग, खरीद और बिक्री पर जोर देते हुए व्यापारियों की समस्याओं के समाधान का आश्वासन दिया।

उन्होंने जी. एस. टी. बचत महोत्सव, हर घर स्वदेशी, व्यापारियों के लिए पेंशन व बीमा योजनाओं की जानकारी दी तथा व्यापारियों को स्वदेशी अपनाने की शपथ दिलाई।

इस अवसर पर ग्रोमा के पूर्व अध्यक्ष शरदभाई मारु को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

कार्यक्रम में ग्रोमा, CAMIT, CAIT सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी तथा लगभग 500 व्यापारी उपस्थित रहे।

- बी.एस. भानुशाली
अध्यक्ष, ग्रोमा

दिव्यांग कल्याणकारी संस्था को जिलास्तरीय प्रतियोगिता में विजेता पद

पुणे जिले में दिव्यांगों के लिए जिलास्तरीय प्रतियोगिता विगत दिवस पुणे के सनस ग्राउंड में आयोजित की गई। पुणे के जिला दिव्यांग सशक्तिकरण अधिकारी और महाराष्ट्र के दिव्यांग कल्याण आयुक्त द्वारा आयोजित विभिन्न दिव्यांग समूहों की प्रतियोगिताओं का आयोजन सनस ग्राउंड में किया गया। उक्त प्रतियोगिता में शारीरिक व बहु विकलांग, बौद्धिक रुप से अक्षम, दृष्टिबाधित और मूक- बधिर आदि ने भाग लिया।

प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर पुणे विभाग के आयुक्त डॉ. चंद्रकांत पुलकुंडवार, पुणे जिला परिषद के मुख्य अधिकारी गजानन पाटील, दिव्यांग कल्याण विभाग के आयुक्त महेश पाटील, जिला दिव्यांग सक्षमीकरण अधिकारी देवडे सहित कई अधिकारी उपस्थित थे। इस प्रतियोगिता में दिव्यांग कल्याणकारी संस्था के 24 विद्यार्थियों ने भाग लिया। शारीरिक व बहु विकलांग दोनों समूहों में दिव्यांग कल्याण संस्था के बच्चों ने सर्वकालिक विजेता का खिताब जीता। दिव्यांग कल्याण संस्थान को यह सम्मान कई वर्षों से प्राप्त होता आ रहा है। दिव्यांग कल्याण संस्था में उपलब्ध उत्तम खेल के मैदान के कारण दिव्यांग बच्चों को विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है और उन्हें प्रतिदिन शारीरिक गतिविधियों में शामिल किया जाता है। इस कारण से दिव्यांग कल्याणकारी संस्था के छात्रों को हर साल विजेता का खिताब जीतने का अवसर मिलता है। दिव्यांग कल्याणकारी संस्था के कार्याध्यक्ष एड. मुरलीधर कचरे व सचिव शंकर जाधव, कोषाध्यक्ष प्रकाश टिळेकर, सह कोषाध्यक्ष मारुती राऊत, सहसचिव राहुल बनकर ने सभी बच्चों का अभिनंदन किया। क्रीडा शिक्षिका ज्योती बोरुडे व मुख्याध्यापिका शिवानी सुतार ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
Need funds, fast?
With TJSB Personal Loan help is just a few steps away.
BANK LOAN APPLICATION
APPROVED
Get a Personal Loan with a simple process, minimal paperwork, & quick disbursal.
Up to
₹5 Lakhs
For salaried, professionals & businessmen
*T&C Apply
www.tjsb.bank.in | : 022-48897204